

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَرَهْقَ الْبَاطِلُ إِنَّ  
الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا

और कह :

सत्य आ गया और असत्य भाग गया।  
असत्य भागने वाला ही था। (17:81)

## सत्यमेव् जयते

विश्व की सब से बड़ी, प्राधिकृत तथा प्राचीनतम् इस्लामी धर्म—संस्था  
अल—अज़हर शरीफ मिस्र

के प्रबुद्ध एवं मूर्द्धन्य उलेमा ने आखिर हज़रत मौलाना मुहम्मद अली लाहौरी द्वारा रचित  
बहुविध इस्लामी—साहित्य (Islamic Literature) को शतप्रतिशत इस्लामी, ज्ञानवर्धक  
तथा अत्यन्त उपयोगी घोषित कर ही दिया। उन्होंने हज़रत मौलाना मुहम्मद अली  
लाहौरी के विचारों और मान्यताओं को भी इस्लाम—संगत लसलीम कर लिया है। संस्था  
के अध्यक्ष महामहिम हज़रत अल्लामा मुफर्ती शैख़ मुहम्मद तंतावी ने हज़रत मौलाना  
मुहम्मद अली के नाम के आगे 'अल्लामा' (इस्लाम का महा वेत्ता) शब्द जोड़ने की  
सिफारिश भी की। हज़रत मौलाना मुहम्मद अली की सदा—बहार सुविख्यात कृति (The  
Religion of Islam) के अरबी संस्करण के लिए महामहिम अल्लमा शैख़ तंतावी ने स्वयं  
प्रस्तावना लिख कर इस मामले में पहल भी कर दी है। जिसके लिए हम उनके अति  
आभारी हैं। असल अरबी प्रमाणपत्रों को अन्यत्र देखा जा सकता है।

फल—हम् दुलिल—लाहि अला ज़ालिक!

दुनिया की सब से बड़ी, प्राधिकृत तथा प्राचीनतम इस्लामी  
धर्म-संस्था अल-अज़हर शारीफ मिस्र के अध्यक्ष  
महामहिम अल्लामा मुफती शैख मुहम्मद तंतावी का फ़तवा

### مقدمة

### فصيلة الإمام الأكبر

### شيخ الأزهر

اطلعت على كتاب "الدين الإسلامي" للعلامة مولانا محمد على  
رحمه الله وطيب ثراه، وقد لمست في هذا الكتاب التفيس  
الأخلاص وصدق العقيدة والعلم النافع وأسأل الله عز وجل أن  
يكون هذا الكتاب العلمي الجليل في ميزان خستان سعادته.

وصلى الله على سيرنا محمد وعلى آله وصحبه وسلم

شيخ الأزهر

محمد حنفي

٢٠٠٢/٦/١٨

### प्रस्तावना

"मैं ने अल्लामा मौलाना मुहम्मद अली साहिब (अल्लाह उन पर दयालुता वर्षित करे, और उनके दरजे बुलंद करे!) की किताब 'इस्लाम धर्म' (The Religion of Islam) पढ़ी। और निश्चय ही मैं ने इस उम्दा किताब में इस्लाम के प्रति सच्ची श्रद्धा और मान्यताओं की सत्यता और लाभप्रद ज्ञानराशि को पाया है। अतः मैं अल्लाह से, जो प्रभुत्वशाली और महिमावान है, यही प्रार्थना करता हूँ कि वह इस उम्दातरीन ज्ञानवर्धक किताब को लेखक के पुण्यों के खाते में डाल दे।"

अल्लाह हमारे आका हजरत मुहम्मद<sup>صلی اللہ علیہ وسلم</sup> पर, और उनके सच्चे अनुयायिओं पर और  
उनके साथियों पर 'दर्लद' भेजे और शांति वर्षित करे!

शैख-उल-अज़हर

मुहम्मद तंतावी

18-6-2006

"The Muslim Prayer-Book" का हिन्दी रूपांतर

# इस्लामी नमाज़

(और संस्कार विधि)

मूल अंग्रेज़ी लेखन

अल्लामा हज़रत मौलाना मुहम्मद अली

विश्वविख्यात मूर्छन्य विद्वान्

एवं

सुफ़स्सर-ए-कुरआन (टीकाकार)



अनुवाद

अल-हाज डॉ. खुशीद आलम तारीन

الدَّارُ الْإِسْلَامِيَّةُ لِلنَّشْرِ

अल-दारुल-इस्लामीयह लिल-नशर

P.O.Box 3370, Dublin, Ohio, USA

## The Muslim Prayer-Book

*First Edition 1917*

*Second Edition (booklet form) 1939*

*Third (reprint) Edition 1950*

*Fourth (reprint) Edition 1957*

*Fifth Offset Edition 1974*

*Sixth Revised edition 1992*

इस्लामी नमाज़ और संस्कार विधि

प्रथम हिन्दी संस्करण : 2009

© 2009, Ahmadiyya Anjuman Isha'at Islam Lahore Inc., U.S.A.

P.O. Box 3370, Dublin, Ohio 43016, U.S.A.

Internet : [www.muslim.org](http://www.muslim.org)

E-mail : [aaiil@aol.com](mailto:aaiil@aol.com)

*All Rights Reserved throughout the world.*

*The Copyright of this hindu booklet, in printed, electronic and all other forms, is strictly enforced by the Publisher.*

भारत में मिलने का पता :

A.A.I.I.L

THE MOSQUE, QALAMDAN PORA,  
SRINAGAR, KASHMIR

A.A.I.I.L

L-25A, DILSHAD GARDEN,  
DELHI- 110095

MOTILAL BANARSIDAS PUBLISHERS  
PRIVATE LIMITED, DELIHI

अल्लाह—अपार दयालु, सतत कृपालु के नाम से।

## अनुवादक की ओर से

हज़रत मौलाना मुहम्मद अली<sup>رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ وَبَرَّاهٰنُهُ وَسَلَّمَ</sup> ने 1949 ई० में एक स्मारकीय कृति नमाज़ और तरक्की की तीन राहें प्रकाशित की। यह उर्दू पुस्तक नमाज़ के शारीरिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक पहलुओं को पूर्णरूपेण उजागर करती है। अंग्रेज़ी और अरबी पाठकों के विशेष अनुरोध पर इसको अंग्रेज़ी और अरबी भाषा में भी रूपांतरित किया गया। भारत-पाक उपमहाद्वीप तथा अरब देशों के मुस्लिम उलेमा ने इस अद्भुत कृति को एकसमान सराहा, और श्लाधायुक्त समीक्षाएं प्रकाशित कीं—यह जानते हुए कि लेखक अहमदी मुसलमान है। मुझे 2002 ई० में मूल उर्दू पुस्तक के संशोधन, परिवर्धन और हिन्दी अनुवाद को प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मूल कृति की तरह इस अनुवाद को भी बहुत पसंद किया गया। भारतीय मुसलमानों में भी उर्दू की तुलना में हिन्दी का चलन दिनोदिन बढ़ रहा है, अतएव बहुत से हिन्दी भाषाभाषी मुसलमानों ने मौलाना मुहम्मद अली की सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी पुस्तक “The Muslim Prayer- Book” के हिन्दी अनुवाद के लिए बार बार अनुरोध किया। इसी प्रबल आग्रह के निमित इस पुस्तक को प्रकाशित किया जा रहा है।

अल्लाह का शुक्र है कि अब मुस्लिम जगत की प्राचीनतम, प्राधिकृत तथा सब से बड़ी इस्लामी संस्था ‘अल-अज़हर अल-शरीफ मिस्र’ के मूर्द्दन्य उलेमा ने हज़रत मौलाना मुहम्मद अली द्वारा रचित इस्लामी साहित्य के शतप्रतिशत इस्लाम—संगत होने का लिखित फ़तवा जारी कर दिया है (छाया चित्र इस पुस्तक के आरंभ में देखें)। अतः तंगनज़र कट्टरपंथी उलेमा के ग़लत एवं सप्रयोज्य प्रॉपगेंडे से प्रभावित होने की कोई ज़रूरत नहीं। अल्लाह से दुआ है कि वह हमारी इस भेंट को क़बूल करे। अमीन!

खुर्शीद आलम तारीन,

लुधयाना, पंजाब

जुलाई 24, 2009

## प्राक्कथन

चिरकाल से एक ऐसी अंग्रेजी पुस्तक की मांग हो रही है जिस में इस्लामी प्रार्थना (नमाज़) का पर्याप्त विवरण हो। जब 1917 ई० में मैं ने मेरी अंग्रेज़ी कुर्उनी तफ़सीर (टीका) प्रकाशित की तो उसके प्राक्कथन में नमाज़ को भी शामिल कर दिया था। यही लेख किताबी शकल में अनेक बार प्रकाशित होता रहा। लेकिन जिस पुस्तिक को मैं अब मुस्लिम जनता के सामने प्रस्तुत करने जा रहा हूँ उस में नमाज़ का सविस्तार विवरण तो है ही, यानि पांच वक्त की नमाजें कब और कैसे पढ़ी जाएं; जमाअत नमाज़, जुमा नमाज़ और ईद की नमाज़ को कैसे अदा किया जाए; साथ में जीवन के महत्वपूर्ण संस्कारों जैसे जन्म, विवाह और मृत्यु संबंधी ज़रूरी जानकारी भी रख दी गई है। पुस्तक के अन्त पर ज़िन्दगी के बहुविध पहलुओं से संबंधित अनेक सुन्दर दुआएँ हैं जनका चयन कुर्उन शरीफ और हदीस से किया गया है। मानवीय जीवन में इनकी अक्सर ज़रूरत पड़ती है।

इन दुआओं के विषय में यह बता देना ज़रूरी समझता हूँ कि इस्लाम इन्सान को परमात्मा की मौजूदगी का एहसास सिफ़ मस्जिद या उपासनागृह की चारदीवारी के भीतर ही नहीं कराता, बल्कि दैनिक कारोबार में व्यस्त रहते हुए भी इस एहसास को कायम रखता है। प्रभु की विद्यमानता का स्थायी एहसास इन्सान के भीतर एक सुखद एवं अद्भुत कार्यशक्ति का संचार कर देता है। यही वजह है कि अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद<sup>صلی اللہ علیہ وسَّلَّمَ</sup>ने अपने अनुयायिओं को यह शिक्षा दी कि वे जीवन के हर मामले में प्रार्थना का सहारा लें। उद्देश्य सिफ़ यही था कि दैनिक कारोबार में व्यस्त रहते हुए भी हम अल्लाह की विद्यमानता को एक जीवंत हकीकत के रूप में अनुभव करें।

मुहम्मद अली

प्रेसीडेंट,

अहमदीया अंजुमन इशाते इस्लम,

अहमदीया बिल्डिंग्स, लाहौर,

30 मई 1938 ई०

# इस्लामी नमाज़ और संस्कार विधि

## विषय सूची

प्राककथन (मौलाना मुहम्मद अली द्वारा लिखित)	
नमाज़ (प्रार्थना) क्या है? .....	1
पांच नमाजें	
1. नमाज़ का नियमित रूप.....	5
2. नमाज़ के समय.....	6
3. कुण्ड .....	7
4. अज्ञान .....	8
5. नमाज़ की विधि .....	10
6. जमाअत नमाज़ .....	12
7. एक रकअत की रूपरेखा .....	14
8. दुआये कनूत .....	22
9. नमाज़ के बाद के अज्ञकार .....	24
जुमा की नमाज़ .....	26
खुतबे की भाशा .....	29
ईद की नमाज़ .....	31
त.हज़्.जुद और त.रा.वीह .....	33
वशा के लिए नमाज़ .....	34
ग्रहण के अवसर पर नमाज़ .....	35
नमाज़े जिनाज़ह .....	35
जन्म संबंधी संस्कार .....	39
निकाह का खुतबह .....	39
जानवरों का जिबह .....	43
कुर्�आनी दुआएं .....	43
सो कर जागने की दुआ .....	51
घर से बाहर जाते समय	
की दुआ.....	51
घर में दाखिल होते	
समय की दुआ .....	52
खाने या पीने से पहले	
की दुआ .....	52
खाना खाने के बाद	
की दुआएं .....	52
घौचालय जाते समय	
की दुआ .....	53
घौचालय से बाहर आते	
समय की दुआ.....	53
घर में दाखिल होते	
समय की दुआ .....	53
जब बीमार की खैरियत पूछे .....	54
कबरिस्तान जाते	
समय की दुआ .....	54
सफर पर जाते समय	
की दुआ .....	55
सवारी या गाड़ी चलाते	
समय की दुआ.....	56
कष्टी पर सवार होते	
समय की दुआ .....	56
तकलीफ के समय	
की दुआ .....	56
दर्पण देखते समय	
की दुआ .....	57
पहला फल खाते समय	
की दुआ .....	57
स्नान या बुजू के बाद	
की दुआ .....	57
जब दुष्प्रभन का सामना करे .....	58
इस्ति.खा.रह यानि	
सही मार्ग सुझाये जाने	
की प्रार्थना.....	58
छोटे छोटे वाक्य :	
जिनको मुसलमान अपने	
दैनिक जीवन में इस्तेमाल	
करता है.....	59

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَللّٰهُ—اپاڑ دیالو، ساتت کृپا لو کے نام سے।

## نماज़ (प्रार्थना) क्या है?

परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास हर धर्म का अनिवार्य अंग है। धर्म का केवल इतना ही काम नहीं कि परमात्मा के अस्तित्व को एक थियोरी या नज़ररिये मात्र के तौर पेश कर दे, बल्कि वह इस विषय को काफ़ी दूर तक ले जाता है। धर्म इन्सान के दिल व दिमाग में यह बात कि—‘खुदा है’—पूरे यकीन के साथ बिठा देना चाहता है। यह विश्वास इन्सानी जीवन में एक ज़िन्दा शक्ति का काम करता है। इसी महा लक्ष्य की प्राप्ति उपासना या इबादत का वास्तविक उद्देश्य है। ‘खुदा है’—इसका यकीन सिर्फ़ जुबानी इक़रार मात्र से पैदा नहीं हो सकता, और न ही बाहरी साधन इस मामले में ज्यादा मदद दे सकते हैं। यह बात सिर्फ़ भीतरी अनुभूति द्वारा ही हासिल होती है, जिसको पाने का प्रमुख एवं सफलतम साधन प्रार्थना या नमाज़ है। इसमें शक नहीं कि आजकल अक्सर लोगों के यहां प्रभु का अस्तित्व एक थियोरी से कुछ ही बढ़ कर है, लेकिन हर दौर में और हर कौम में ऐसे महा पुरुष प्रकट हाते रहे हैं जिन्होंने यह गवाही दी कि वे अपनी रुहानी आँख से परमात्मा को निहार चुके हैं, और यह कि उन्हें यह पावन लक्ष्य प्रार्थना (नमाज़) द्वारा ही प्राप्त हुआ। इस सुखद एवं मंगलमय अनुभूति के बाद ही इन महान आत्माओं ने अपना सारा जीवन लोकसेवा को अर्पित कर दिया। उनके मामले में परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास एक प्रबल नैतिक शक्ति बना जिसने न सिर्फ़ उनकी अपनी-ज़िन्दगी बदल डाली बल्कि वे सदियों तक अनेक कौमों और राष्ट्रों की ज़िन्दगियां बदल देने में भी कामयाब हो गए। इन महा पुरुषों ने कौमों और देशों का इतिहास ही बदल डाला। उनकी निरस्वार्थता और सत्यता पर कभी उंगली न उठाई जासकी। अतः ऐसे महा पुरुषों की गवाही को किसी भी तरह रद्द नहीं किया जासकता, यह गवाही सचमुच महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह हर युग में समस्त कौमों की समयक गवाही है। इन सब ने अमलन दिखा दिया कि जब प्रार्थना द्वारा परमात्मा के अस्तित्व पर विश्वास इन्सान के दिल में पूरी तरह जाग्रत हो

जाता है तो यह एक ज़बरदस्त नैतिक शक्ति बन जाता है, एक ऐसी प्रबल शक्ति जिसके आगे सभी भौतिक शक्तियां झुक जाती हैं। क्या इन महान आत्माओं का यह अनुभव दूसरों के लिए आदर्श नहीं, कि वे भी परमात्मा को जिन्दगी का मूलभूत नैतिक-स्रोत बना सकते हैं? क्योंकि जो शक्तियां एक इन्सान को दी गई हैं वही दूसरे को भी दी गई हैं, उनके सही इस्तेमाल से इन्सान अब भी वही कार्य कर सकता है जो पहले कोई और कर चुका है। मानवसमाज के इस व्यापक तजरुबे को रहने दीजिए, यदि इस विषय को बौधिक दृष्टि से भी देखें तो हमें ईश्वर पर विश्वास का सहज तकाज़ा इबादत या प्रार्थना ही नज़र आयेगा। नैतिक उच्चता को प्राप्त होने की इच्छा इन्सन की प्रकृति पर अंकित है, यह इच्छा भौतिक उत्कृष्टता पाने से भी कहीं बढ़ कर है। इन्सान की यह अभिलाषा तभी पूरी हो सकती है जब वह विश्वात्मा से, जो पवित्रता और नैतिकता का मूलस्रोत है, संबंध स्थापित करे, और प्रार्थना इसी दिशा में एक सबल कोशिश है। हज़रत पैग़म्बरश्री مُحَمَّدَ<sup>صلی اللہ علیہ وسَلَّمَ</sup> की एक हदीस (कथन) में प्रार्थना (नमाज़) को अपने रब (पालनहार-स्रष्टा) के साथ مुनाज़ात यानि गुप्त संवाद या संपर्क कहा गया है :

عَنْ أَنَسِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ  
فَرَمَأَ يَا : "جَبْ تُرْمَ مِنْ سَرِّكَارِي  
نَمَاجِزَةَ حَدَّرَتْ هَيْ (مَانُو) وَهَيْ أَنْفَنَهَ  
رَبَّ سَرِّ رَاجِزَةَ كَيْ بَاتَّهَ كَرَّتْهَ"  
☆  
(बुखारी 9:8)

एक और हदीस में आता है कि इन्सान को खुदा की इबादत ऐसे करनी चाहिए कि मानो वह उसे देख रहा हो। इन कथनों का उद्देश्य यही बताना है कि इबादत या प्रार्थना का असल तकाज़ा यही है कि प्रार्थी सचमुच प्रभु से संपर्क पैदा कर ले।

मानवीय क्षमताओं और शक्तियों का सही विकास इन्सान की भीतरी आत्मा के शोधन और उसकी बुरी प्रवृत्तियों के दमन पर निर्भर है :

قَدْ أَفْلَمَ مَنْ رَكِّبَهُ  
निस्संदेह कामयाब वही है जो इसका शोधन करे' (91:9) ।

1. जिन हवालों के आगे कोई नाम नहीं वे कुर्�आन शरीफ से हैं। इन में पहला अंक सूरत का और दूसरा अंक आयत का नंबर है।

प्रार्थना को हृदय शोधन का उपाय बताया गया है :

(उसे) पढ़ता रह जो तेरी ओर किताब से वह्य किया जाता है, और नमाज को कायम रखा / निस्संदेह नमाज अश्लीलता और बुराइ से रोक देती है' (29:45)।

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيَّكَ مِنَ الْكِتَابِ  
وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَإِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ  
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ طَ

अन्यत्र आता है :

'और नमाज कायम कर दिन के दोनों सिरों में और रात के पहले भाग में। क्योंकि नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं' (11:114)।

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَقِ النَّهَارِ وَرُكْنًا  
مِنَ الْلَّيلِ طَإِنَّ الْحُسْنَاتِ يُذْهِبُنَ  
السَّيِّئَاتِ طَذِلَكَ ذِكْرًا لِلَّذِكْرِيْنَ ۝

एक हदीस में नमाज की मिसाल नदी में नहाने से दी गई है :

'अबू हुरैरह कहते हैं कि उन्होंने हज़रत पैगम्बर श्री ﷺ को यह फ़रमाते सुना : अगर किसी के घर के पास नदी बह रही हो, और वह उस में हर रोज़ पांच बार स्नान करे, तुम क्या समझते हो, क्या उसके जिसम पर मैल शेष रहे गी? सहाबह ने कहा, इस से उसके शरीर पर कोई गंदगी बाकी नहीं रहेगी (वह पूरी तरह साफ-सुथरा हो जाए गा)। हज़रत पैगम्बर श्री ﷺ ने फ़रमाया : यही पांच नमाजों की मिसाल है, जिस से अल्लाह अपने बन्दों की सारी बुराइयां दूर कर देता है।' (बुखारी 9:6)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ إِنَّ رَايَتُمْ لَوْاً نَهَرًا

بِبَابِ أَحَدٍ كُنْ بَغْتَلُ فِيهِ كُلُّ  
يَوْمٍ خَمْسًا مَا تَقُولُ ذَالِكَ  
يُبَقِّي مِنْ دَرَنَهُ قَالُوا لَا يُبَقِّي مِنْ  
دَرَنَهُ شَيْئًا قَالَ فَذَلِكَ مَثَلُ  
الصَّلَاةِ الْخَمْسِ يَمْحُوا اللَّهُ بِهَا  
الْخَطَايَا ☆

कई हदीसों में नमाज़ (प्रार्थना) को कफ़्फ़ा रह भी कहा गया है, यानि नमाज़ इन्सान की बुरी प्रवृत्तियों को दबाने का सफलतम साधन है। वजह साफ़ है, 20:14 में 'अल्लाह की याद' को ही इबादत का मुख्य उद्देश्य बताया गया है :

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِنِعْلَمُ<sup>١</sup>  
‘अल्लाह की याद के लिए नमाज़ कायम कर।’

जबकि 29:45 में बताया कि :

‘अल्लाह की याद सब से बड़ी (दमनशक्ति) है’ / وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ<sup>٢</sup>

विचार किया जाए तो साफ़ ज्ञात होगा कि किसी भी कायदे—कानून या नियम को लागू करने से पहले प्रशासन द्वारा उसकी मंजूरी ज़रूरी है। नैतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में यह मंजूरी परम—प्रभु महा—विधाता पर ईमान लाने से ही प्राप्त होती है। अतः जितनी बार उपासक सांसारिक कामधन्दे छोड़ नमाज़ के लिए हाजिर होगा, उतनी ही बार वह परमात्मा के व्यक्तित्व को अपने समीप महसूस करेगा। यह एहसास जितना बढ़ेगा उतना ही ईश्वरीय कादे—कानून को तौड़ना उसके लिए दुष्कर होता चला जाएगा। तात्पर्य यह कि नमाज़ इन्सान के अन्दर पापकर्म के विरुद्ध एक ज़बरदस्त ताक्त पैदा कर देती है, उसके दिल से सभी बुराइयां मिट जाती हैं, नमाज़ नमाज़ी को आध्यात्मिकता के उस सुपथ पर अग्रसर कर देती है, जिस पर चलकर वह अपनी सभी आन्तरिक शक्तियों को पूर्णरूपेण विकसित कर लेता है।



## पांच नमाजें

### 1. नमाज का नियमित रूप

नमाज़ मुसलमान का रुहानी भोजन है जिसका वह दिन में पांच बार सेवन करता है। जो लोग पांच नमाजों की संख्या को ज्यादा समझते हैं, वह सिर्फ़ इतना बताएं कि शरीर को चलायमान रखने के उन्हें दिन में कितनी बार भोजन की ज़रूरत पड़ती है? क्या आत्मा शरीर से ज्यादा हमत्वपूर्ण नहीं? जब शरीर को काम काज के लिए दिन में अनेक बार खाना खाने की ज़रूरत पड़ती है, तो फिर रुहानी ताज़गी एवं गतिशीलता के लिए अनेक बार प्रार्थना की आवश्यकता क्यों नहीं? अगर शरीर को सिर्फ़ सातवें दिन भोजन कराया जाए तो उसे अवश्य बाकी दिनों भूखा रहना होगा। यही नियम रुह पर लागू होगा। इसी वास्तविकता को स्वयं ईसाई धर्म के प्रवर्तक हज़रत ईसा मसीह<sup>अ.स.</sup>ने इन ज़ोदार शब्दों में प्रतिपादित किया है : 'मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकला है जीवित रहेगा' (मत्ती 4:4)। हज़रत ईसा<sup>अ.स.</sup>ने जिस बात की शिक्षा शब्दों द्वारा दी थी उसीको हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मद<sup>स.ल.</sup>ने एक व्यवहारिक रूप प्रदान किया।

यहां यह बात अधिक विचारणीय है कि जहां अन्य धर्मों ने आम तौर पर इबादत (उपासना) के लिए एक पूरा दिन मुकर्रर किया है, जिस में और कोई काम नहीं किया जाता, इसके विपरीत इस्लाम ने इबादत को एक नया आयाम प्रदान किया, वह इस तरह कि उसने नमाज़ को भी इन्सान के दैनिक कारोबार में शामिल कर दिया। इसने इबादत के लिए कोई खास दिन अलग से मुकर्रर नहीं किया, यही वजह है कि इस्लाम में सबत (sabbath) नाम का कोई दिन नहीं। इस्लाम यही चाहता है कि हर मुसलमान अपने दैनिक कारोबार को कुछ समय के लिए छोड़ कर नमाज़ अदा करे, भले ही वह कारोबार में कितना ही व्यस्त क्यों न हो। यही कारण है कि इस्लाम ने मॅन्करी (monkery) जैसी प्रथाओं को समाप्त कर दिया, क्योंकि इन में इन्सान को प्रभु से संपर्क पैदा करने के लिए आजीवन

सांसारिक कामधन्दे तजना पड़ते हैं। इस्लाम की शिक्षानुसार काम—काज में पूरी तरह व्यस्त रहते हुए भी इन्सान प्रभु से संपर्क स्थापित कर सकता है। इस तरह इस्लाम ने उसी बात को संभव कर दिखाया जो इस्लाम के उदय से पहले असंभव समझी जाती थी।

यों तो इस्लाम ने नमाज़ केलिए एक खास विधि और खास वक्ता निश्चित कर इसको एक स्थायी कलेवर प्रदान कर दिया, लेकिन इसके बावजूद काफी कुछ भक्त की मर्जी पर भी छोड़ा गया है। अपनी आत्मा की पुकार प्रभु तक पहुंचाने के लिए वह कुर्�आन शरीफ का कोई सा हिस्सा या कोई सी दुआएं चुन सकता है। नमाज़ की विश्वव्यापी एकरूपता के लिए कायदे कानून मुकर्रर कर दिये गए, ताकि समूचे मुस्लिम जगत में मुसलमान इसको समान रूप से एक नियमित समय पर एक पूर्वनिश्चित तरीके से अदा करें। इसके बावजूद मुसलमान केलिए स्वयं नामज़ में ही अनेक अवसर ऐसे उपलब्ध कराये गए हैं जहां वह व्यक्तिगत रूप से अपने मनोभावों को विन्यपूर्वक जहानों के रब (पालनहार—स्रष्टा) के सामने खोल कर रख सकता है। जहांतक नमाज़ पढ़ने की विधि और नियत समयों का संबंध है तो आम पाठक की जानकारी के लिए निम्नलिखित ब्योरा काफी है।

## 2. नमाज़ के समय

नमाज़ समझबूझ वाली उम्र के हर मुसलमान पर फर्ज़ है, चाहे वह मर्द हो या औरत। नमाज़ को दिन में निम्नलिखित पांच समयों पर अदा किया जाता है :

1. नमाज़े फ़ज़्र यानि सुबह की नमाज़, यह पौ फटने से लेकर सूर्योदय तक पढ़ी जा सकती है।

2. नमाज़े जुहर यानि दोपहर के पहले भाग की नमाज़, इसका समय सूरज ढलते के साथ ही शुरू हो जाता है और अगली नमाज़ तक रहता है। यही नमाज़ शुक्रवार को जुमा नमाज़ का रूप धारण कर लेती है।

3. नमाज़े असर यानि दोपहर के पिछले भाग की नमाज़, इसका समय उस वक्त शुरू होता है जब सूरज अस्त होने का आधा मार्ग तैय कर लेता, और इसका समय सूर्यास्त से कुछ ही समय पहले समाप्त हो जाता है।

4. नमाजे मग्नियनि सूर्यास्त वाली नमाज़, इसको सूर्यास्त के तुरन्त बाद अदा किया जाता है।

5. नमाजे अ.शा, या रात्रि के पहले भाग की नमाज़, इसका समय उस वक्त शुरू होता है जब पश्चिम में सारी लालिमा ग्रायब हो जाती है, और इसको आधी रात तक पढ़ा जासकता है। इसको सोने से पहले अदा करना ज़रूरी है।

जब कोई आदमी बीमार हो या सफ़र में हो या जब बारिश हो रही हो तो जुहर और असर, इसी तरह मग्नियनि और इश्शा की नमाज़ों को एक साथ यानि जमा करके पढ़ा जा सकता है। ये नमाज़ें व्यक्तिगत रूप से भी इकट्ठा की जा सकती हैं और जमाअती तौर भी। जमा नमाज़ों को पहली नमाज के समय या फिर दूसरी नमाज़ के समय इकट्ठा पढ़ सकते हैं।

पांच फर्ज नमाज़ों के अलावा दो नफ़ल नमाज़ें और भी हैं, एक स.ला.तुल-लैल (रात्रि की नमाज़) यानि त.हज़्ज.जुद की नमाज़, दूसरी स.ला.तुज़्ज-जु.हा। त.हज़्ज.जुद की नमाज़ आधी रात के बाद पढ़ी जाती है। त.हज़्�.जुद से पहले नमाज़ी सो जाता है ताकि ताज़ा दम हो कर उठे। यह नमाज़ पौ फटने तक पढ़ी जा सकती है। स.ला.तुज़्ज-जु.हा, इसको चाशत की नमाज़ भी कहते हैं, इसका समय लगभग वही है जो सबह के नाशते का समय है। यह वही समय है जब दो ईदों की नमाज़ें पढ़ी जाती हैं।

### 3. वुजू

नमाज़ पढ़ने से पहले वुजू करना ज़रूरी है। वुजू में शरीर के उन अंगों को धोया जाता है जो आम तौर पर खुले रहते हैं। वुजू करने का तरीका यह है :

1. हाथों को धोना, उनको कलाई तक धोया जाता है।
2. मुँह को साफ़ करना, बाकायदा मिसवाक (टुथ बुरश) करके या फिर खाली कुल्ली करके।
3. नाक को साफ़ करना, नथनों में पानी चढ़ा कर।
4. फिर चेहरा धोना।

5. फिर पहले दाहिना बाजू और तदुपरांत बाहिना बाजू कोहनी तक धोना।

6. फिर सिर का म.स.ह, यानि सिर पर आगे से पीछे की ओर गीला हाथ फेरना। दोनों हाथों की छोटी उँगली और अंगूठे के बीच की तीनों उँगलियां जोड़ कर माथे से गर्दन तक स्पर्श किया जाता है।

7. फिर पाँव टख़नों तक घोये जाते हैं, पहले दायाँ पाँव फिर बायाँ।

यदि आप ने वुजू के बाद मोज़े पहने हों, तो उन्हें उतारना ज़रूरी नहीं, उनका मस्तक करना यानि उनपर गीला हाथ फेरना काफ़ी है। लेकिन यह सुविधा सिर्फ़ 24 घंटे के लिए है, उसके बाद मोज़े उतार कर पैर धोना ज़रूरी है। यही नियम सफ़र या युद्धादि में जूतों पर लागू होगा।

ताज़ा वुजू उसी सूरत में ज़रूरी है जब गुदा से वायु निकले, या आप शौचादि से निवृत्त हों या सो कर जागें। संभोग के बाद पति—पत्नी दोनों को गुस्सल यानि स्नान द्वारा सारा शरीर धोना होगा।

इन्सान बीमार हो या पानी उपलब्ध न हो तो दुंजू या गुस्सल का स्थान त.यम्.मुम ले लेता है। त.यम्.मुम में दोनों हथेलियों को साफ़ मिट्टी पर या किसी ऐसी वस्तु पर स्पर्श किया जाता है जिस पर धूल जमी हो, (फूँक द्वारा अधिक धूल झाड़ कर) फिर इनको हाथों की उलटी तरफ़ और चेहरे पर फेरा जाता है।

#### 4. अज़ान

पांचों नमाज़ों से पहले अज़ान पुकारी जाती है, यानि लोगों को नमाज़ के लिए बुलाया जाता है। अज़ान ऊँची आवाज़ में पुकारी जाती है। अज़ान पुकारने वाले का मुँह किब्ले<sup>1</sup> की तरफ़ होता है, और उसकी एक एक उँगली कानों में रेहती है या सिर्फ़ हाथ कानों तक उठे होते हैं। अज़ान के शब्द ये हैं :

अल्.ला.हु अक्.बर

الله أَكْبَرُ

“अल्लाह सब से बड़ा है।” (यह वाक्य चार बार पुकारा जाता है)

1. किब्ला, वह दिशा या तरफ़ जिसकी ओर इन्सान मुँह करता है। मुसलमानों को हुक्म है कि वे नमाज में अपना मुँह मक्का स्थित खाना काबा की ओर करें। अतएव सारी मस्जिदों का रुख़ अनिवार्यतः खाना काबा की ओर होता है।

अश.हु अन ला इ.ला.ह इल.लल.लाह

اَشَهَدُ اَنْ لَا إِلَهَ اِلَّا اللَّهُ

“मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय और कोई नहीं जो पूजा या उपासना के योग्य हो।” (यह वाक्य दो बार पुकारा जाता है)

अश.हु अन.न मु.हम.म.दर.र.सू.लु.ला.ह

اَشَهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

“मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद<sup>صل</sup>अल्लाह का रसूल है।”

(यह वाक्य दो बार पुकारा जाता है)

है.य अ.लस्-स.लाह

حَيٌّ عَلَى الصَّلَاةِ

“नमाज़ के लिए आओ।”

(दायीं ओर मुँह फेरते हुए दो बार कहा जाता है)

है.य अ.लल्-फ.लाह

حَيٌّ عَلَى الْفَلَاحِ

“सफलता की ओर आओ।”

(बायीं ओर मुँह फेरते हुए दो बार कहा जाता है)

अल.ला.हु अक.बर

الله اَكْبَرُ

“अल्लाह सब से बड़ा है।” (यह वाक्य दो बार पुकारा जाता है)

ला इ.ला.ह इल.लल.लाह

لَا إِلَهَ اِلَّا اللَّهُ

“अल्लाह के सिवाय और कोई नहीं जो पूजा या उपासना के योग्य हो।”

(यह वाक्य दो बार कहा जाता है)

फज्र की नमाज़ में है.य अ.लल्-फ.लाह के बाद यह वाक्य दो बार पुकारा जाता है :

अस्-स.ला.तु ख़.रम.मि.नन्-नौम

الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

“नमाज़ नींद से बेहतर है।”

अज्ञान के बाद अज्ञान देनेवाला और अज्ञान सुनने वाले अल्लाह के सम्मुख यह प्रार्थना करते हैं :

अल्.ला.हुम्.म रब्.ब हा.जि.हिद्-

दअ.व.तित्-ता.م.ति वस्-स्.ला.

तिल्-का.अि.म.ति आ.ति मुहम्.मद

निल्-व.सी.ल.त वल्-फ.जी.ल.त

वब्.अस्.हु म.का.मम्.मह.मू.द

निल्-ल.जी व.अदत्.हु

اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدُّعَوَةِ

النَّاَمَةُ وَالصَّلْوَةُ الْقَائِمَةُ أَتَ مُحَمَّداً

الْوَسِيلَةُ وَالْفَضِيلَةُ وَابْنُهُ

مَقَامًا مَحْمُودًا بِنَ الَّذِي وَعَدَنَاهُ

“ऐ अल्लाह! इस पूर्ण पुकार और सदा रहने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद को सामीप्य और प्रतिष्ठा प्रदान कर और उसको महिमा के उस स्थान पर आसीन कर दे जो तू ने उसे वादा दिया है।”

## 5. नमाज़ की विधि

नमाज़ के आम तौर पर दो हिस्से हैं, फ़र्ज़ और सुन्नत (या सुन्नह)। नमाज़ के फ़र्ज़ वाले हिस्से को जमाअत के साथ, इमाम के पीछे अदा करना अधिक श्रेष्ठ है। सुन्नत हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मद ﷺ के व्यवहार को कहते हैं। नमाज़ के सुन्नत वाले हिस्से को अकले व्यक्तिगत रूप से अदा किया जाता है। जब किसी कारणवश फ़र्ज़ों को जमाअत से न पढ़ा जा सके तो सुन्नतों की तरह उन्हें भी अकेल ही पढ़ सकते हैं।

फ़र्ज़ और सुन्नत वाले भागों में रकअतों की एक निश्चित संख्या होती है, जो इस प्रकार है :

फ़र्ज़ की नमाज़ में पहले दो रकअत सुन्नत हैं, जिन को अकेले ही पढ़ा जाता है, उसके बाद दो रकअत फ़र्ज़ हैं जिनको जमाअत के साथ पढ़ा जाता है।

**जुहर की नमाज़** फ़जर से बड़ी है, इस में पहले चार रकअत सुन्नत को अकेले पढ़ा जाता है, उसके बाद चार रकअत फ़र्ज हैं जिनको जमाअत के साथ पढ़ा जाता है, उसके बाद दो रकअत सुन्नत और हैं जिनको अकेले पढ़ा जाता है।

**शुक्रवार** वाले दिन जुहर का स्थान **जुमा—नमाज़** ले लेती है। इस में चार रकअत सुन्नत और चार रकअत फ़र्ज के बजाए दो दो रकअत ही अदा किए जाते हैं, बिल्कुल अन्य नमाजों की तरह यानि सुन्नत की रकअतों को अकेले और फ़र्ज की रकअतों को जमाअत के साथ। **जुमा—नमाज़** की विशेषता खुतबा (प्रवचन) है जो फ़र्ज की दो रकअतों से पहले पढ़ा जाता है।

**असर की नमाज़** में सिर्फ़ चार रकअत फ़र्ज हैं जो जमाअत के साथ अदा किए जाते हैं।

**मगरिब की नमाज़** में पहले तीन रकअत फ़र्ज जमाअत के साथ और फिर दो रकअत सुन्नत अकेले पढ़े जाते हैं।

**इशाअ की नमाज़** में पहले चार रकअत फ़र्ज जमात के साथ और फिर दो रकअत सुन्नत अकेले पढ़े जाते हैं, उसके बाद तीन रकअत वित्र और हैं, जिनको अकेले पढ़ा जाता है।

**तहज्जुद की नमाज़** आठ रकअत सुन्नत है, जिसको दो दो कर अकेले पढ़ा जाता है।

**जुहा (चाशत)** की नमाज़ में दो या चार रकअतें पढ़ी जाती हैं।

**ईद की नमाज़** दो रकअत सुन्नत है, लेकिन इसको जमाअत के साथ पढ़ा जाता है। इस में खुतबा (प्रवचन) नमाज अदा कर लेने के बाद होता है।

सफ़र में नमाज़ को कसर किया जाता है, यानि बाज़ रकअतों को कम या छोड़ दिया जाता है। सुन्नतें छोड़ दी जाती हैं, सिवाय फ़जर की दो रकअत सुन्नत के। जुहर, असर और इशाअ के चार रकअत फ़र्ज दो दो रह जाते हैं। यदि किसी को पता हो कि वह अमुक स्थान पर चार दिन या उस से ज्यादा ठहरने वाला है, तो वह सफ़र की समाप्ति पर कसर नहीं कर सकता। यदि चार दिन से कम रुकना हो तो नमाजों में कसर कर सकते हैं।

## 6. जमाअत नमाज़

यदि दो या दो से अधिक व्यक्ति हों तो वह नमाज़ को जमाअत से अदा करें।<sup>1</sup> उनमें से एक इमाम बन जाए और बाकी उसका अनुसरण करें। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अकेला हो तो वह सुन्नतों की तरह फ़र्ज़ भी अकेले ही अदा कर सकता है।

इस्लामी जमाअत या सामूहिक प्रार्थना की दो खास विशेषताएं हैं। एक यह कि इमामत कोई भी व्यक्ति करा सकता है, शर्त केवल इतनी है कि वह कुर्�आन शरीफ़ सब से ज्यादा जानता हो, और यह कि नेकी, तथा अल्लाह और प्राणीमात्र के प्रति कर्तव्यों का सर्वाधिक पालन करने वाला हो। दूसरी बात यह कि मुसलमानों की सामूहिक नमाज़ में किसी किसम का भेदभाव या ऊँचनीच नज़र नहीं आती। एक ही पंक्ति में बादशह के साथ उसका गुलाम भी उसके संग काँधे से काँधा मिलाये खड़ा हो सकता है। डा. सर मुहम्मद इक़बाल ने क्या खूब कहा है :

एक ही सफ़<sup>1</sup> में खड़े हो गए महमूद व अय्याज़<sup>2</sup>।

न कोई बन्दा<sup>3</sup> रहा और न कोई बन्दानवाज़<sup>4</sup>।।

1. पंक्ति, 2. अय्याज़ महमूद गज़नवी का प्रिय गुलाम, 3. सेवक, 4. स्वामी

जमाअत शुरू करने से पहले इक़ामह या इक़ामत (छायाचित्र—क) पुकारी जाती है, यानि ऊँची आवाज़ में यह पुकारा जाता है कि नमाज़ शुरू होने

1. 'जमाअत नमाज़' के लिए मुसलमान (मर्द और औरतें दोनों) नियत समय पर एक जगह इकट्ठा होते हैं और सामूहिक रूप से अल्लाह की स्तुति और गुणगान करते हैं और सामूहिक रूप से ही अपनी पंक्ति (अ. सफ़) या पंक्तियों में खड़े हो जाते हैं, यह नमाजियों की संख्या पर निर्भर है। उनके पाँव भी एक ही सीध में होते हैं। इनमें से एक को नमाज़ पढ़ाने के लिए चुना जाता है, जिसको इमाम या अगुआ कहते हैं। इमाम सब के आगे खड़ा हो जाता है, और नमाज़ पढ़ाता है। यदि जमाअत में औरतें भी हों तो वे सब से पीछे अपनी एक अलग पंक्ति बना लेती हैं (अकेली औरत हो तब भी)। नमाज़ समाप्त पंक्ति के बीच का फासला या अन्य पंक्तियों के बीच का फासला इतना होता है कि सजदे के समय पिछलों के सिर अगलों के पेरों के पास रह सकें। यह फासला आम तौर पर चार फुट होता है। दो आदमी भी जमाअत पढ़ सकते हैं, एक इमाम बन जाता है और दूसरा उसकी दाहिनी ओर खड़े होकर उसका अनुसरण करता है। इस सूरत में इमाम दूसरे व्यक्ति से थोड़ा आगे रहता है, मानो छः इंच के करीब। दो आदमी जमाअत पढ़ रहे हों और तीसरा आजाये, तो दो सूरतें होंगी। या तो इमाम आगे हो

जारही है। इकामत की आवाज़ अज्ञान से कम ऊँची होती है। इकामत में वही वाक्य दोहराये जाते हैं जो अज्ञान में दोहराये जाते हैं, केवल दो अन्तरों के साथ। एक यह कि इकामत में अज्ञान के वाक्यों की संख्या आधी रह जाती है, यानि अल्.ला.हु अक्.बर दो बार, अश्.ह.दु अन ला इ.ला.ह इल्.लल्-लाह और अश्.ह.दु अन्.न मु.हम्.म.दर-र.सू.लुल्-लाह को एक एक बार, है.य 'अ.लस्-स.लाह और है.य 'अ.लल्-फ.लाह को भी एक एक बार (दायें या बायें मुड़े बगैर), अल्.ला.हु अक्.बर और ला इ.ला.ह इल्.लल्-लाह एक एक बार। अलबत्ता है.य 'अ.लल्-फ.ला.ह के बाद

### كَدْ قَامَتِ الْصَّلَاةُ كَدْ كَامَتِ السَّجْدَةُ

“नमाज तैयार है”, शब्दश: “नमाज खड़ी हो चुकी”।

(इस वाक्य को दो बार पुकारा जाता है)।

फ़ज्जर की अज्ञान में जो शब्द अतिरिक्त जोड़ जाते हैं वे भी इकामत में पुकारे नहीं जाते। इकामत में कद कामतिस्-स.लाह वाले वाक्य को छोड़ (उसे दो बार पढ़ा जाता है) अन्य सभी वाक्य केवल एक एक बार भी पुकारे जा सकते हैं। हाँ! एक बात और वह यह कि अज्ञान धीरे धीरे बड़े इतमिनान से पुकारी जाती है, जबकि इकामत को जल्दी जल्दी पुकारा जाता है।

नमाज में इमाम पहले सूरा फ़ातिहा पढ़ता है और उसके बाद कुर्�आन शरीफ का कोई सा हिस्सा पढ़ता है। इमाम ऐसा सिर्फ़ पहली और दूसरी रकअत में ही करता है। युहर और असर को छोड़ अन्य सभी नमाजों में इमाम पहली दो रकअतों में कुर्�आन ऊँची आवाज़ में पढ़ता है। जिन नमाजों में दो रकअत से अधिक फ़र्ज़ हैं उन में तीसरी और चौथी रकअत में सिर्फ़ सूरा फ़ातिहा ही पढ़ी जाती है, वह भी इतनी धीमी आवाज़ में कि उसे सिर्फ़ पढ़ने वाला ही सुन सके। अलबत्ता मुद्रा बदलने पर पुकारी जाने वाली तकबीरों और ज़िक्र को ऊँची आवाज़ में ही पुकारा जाता है।

जाए और पीछे दो की पंक्ति रह जाए, या इमाम के साथ खड़ा व्यक्ति ही पीछे को हट कर पंक्ति बना ले। इमाम के पिछे वाले लोग मुक़तदी कहलाते हैं, यानि इमाम का अनुसरण करनेवालों। अनुशासन इतना पक्का होता है कि पीछे वाले हर बाते में इमाम के अनुसरण के लिए बाघ्य होते हैं, चाहे वह कोई गलती ही क्यों न कर जाए। हाँ! वे سुब.हा.नल्-लाह (अल्लाह ही त्रुटियों से परे है) कह कर उसे गलती का एहसास दिला सकते हैं। अगर इमाम फिर भी गलती समझ न पाया तो भी अनुसरण इमाम का ही होगा।

## 7. एक रकअत की रूपरेखा

हम पहले ही बता चुके हैं कि हर नमाज़ में कुछ रकअतें फ़र्ज़ और कुछ रकअतें सुन्नत होती हैं। एक रकअत को यों पूरा किया जाता है :

1. नमाज़ी किबले की तरफ़ मुँह कर खड़ा हो जाता है, और أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ अल्.ला.हु अक्.बर (अल्लाह सबसे बड़ा है!) कहते हुए अपने दोनों हाथ कानों तक उठाता है। इसको तक्.बीरे तह.री.मह कहते हैं। (छायाचित्र—ख)

2. इसके बाद कि.या.म है (छायाचित्र—ग), जिस में नमाज़ी खड़ा रहता है। छाती या उस से कुछ नीचे दायें हाथ को बायें हाथ पर रखा जाता है, और उसके बाद एक दुआ जिसे इस्.तिफ़्.ता.ह कहते हैं पढ़ी जाती है, आम तौर पर यह दुआ पढ़ते हैं:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ  
وَنَبَارَكَ أَسْمُكَ وَنَعَالِيْ جَدُّكَ  
وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

सु.ब.हा.न.कल्-ला.हुम्.म व बि.हम्-  
दि.क व त.बा.र.कस्-मु.क व  
त.आ.ला जद्.दु.क व ला इ.ला.ह  
गै.रु.क

“तेरी महिमा हो! ऐ अल्लाह, और स्तुति तेरे ही लिए है, और तेरा नाम बरकत वाला है, और तेरी शान सर्वोच्च है, और तेरे सिवा और कोई नहीं जो इबादत (पूजा) का हक़दार हो।”

निम्नलिखित लंबी प्रार्थना भी पढ़ी जा सकती है :

इ.न्.नी वज्.जह.तु वज्.हि.य लिल-  
ल.जी फ.त.रस्-स.मा.वाति वल-  
अर्.ज़ ह.नी.फ़ंव-व मा अ.न मि-  
नल-मुश्.रि.कीन इन्.न स.ला.ती व  
तु.सु.की व मह.या.य व म.मा.ती  
लिल-ला.हि रब्.बिल-आ.ल.मीन  
ला श.री.क लहू व बि.जा.लि.क  
उ.मिर्.तु व अ.न मि.नल-मुस्.लि.मीन  
अल्.ला.हुम्.म अन्.तल-म.लि.कु ला

إِذْ وَجَهْتُ وَجْهِي لِلَّهِ فَطَرَ  
الشَّمْوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَانًا  
مِنَ الْمُشْرِكِينَ هَذِهِ صَلَاتِي وَسُكُونِي  
وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ  
لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا  
مِنَ الْمُسْلِمِينَ هَذِهِ الْهُمَّ أَنْتَ الْمُلِكُ

इ.ला.ह इल.ला अन.त अन.त  
रब.बी व अ.न अब.दु.क ज.लम.तु  
नफ.सी वअ.त.रफ.तु बि.जाम.बी  
फग.-फिर.ली यु.नू.बी ज.मी.अन ला  
यग.फि.रण.-यु.नू.ब इल.ला अन.त  
वह.दि.नी लि.अह.स.निल.अख.ला.कि  
ला यह.दी लि.अह.स.नि.हा इल.ला  
अन.त वस.रिफ् अन.नी सै.यि.‘अ-  
हा ला यस.रि.फु सै.यि.‘अ.हा इल-  
ला अन.त

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُرْقِي وَأَنْتَ  
عَبْدُكَ طَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ  
بِذَنْبِي فَاغْفِرْنِي ذُنُوبِي جَنِيعًا لَا  
يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ وَاهْدِنِي  
لِأَحْسَنِ الْأَحْلَاقِ لَا يَهْدِي  
لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّي  
سَيِّئَهَا لَا يَصِرِّفْ سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ

“निस्संदेह मैं ने अपने आपको एकनिष्ठ होकर उसकी ओर फेर दिया जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया, और मैं बहुदेववादियों में से नहीं। निस्संदेह मेरी नमाज, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना (सब) अल्लाह के लिए है, जो सब जहानों का पालनहार-स्थान है, उसका कोई साझी नहीं; और इसी बात का मुझे आदेश मिला है, और मैं आज्ञाकारियों में से एक हूँ। ऐ अल्लाह! तू बादशाह है, तेरे सिवाय कोई ईश्वर नहीं। तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूँ; मैं ने अपनी आत्मा के प्रति अन्याय किया, और मैं अपने कसूरों का इकरार करता हूँ, अतः तू मेरे सब कसूर माफ कर दे, तेरे सिवाय कोई नहीं जो कसूर माफ करे। ऐ अल्लाह! मुझे उत्तम संस्कारों का मार्ग दिखा, तेरे सिवाय कोई नहीं जो उनमें से उत्तम की ओर मार्ग दिखाए; और मुझ से कुसंस्कार दूर कर, तेरे सिवाय कोई नहीं जो बुरे संस्कारों को दूर करे।”

इस के बाद ये शब्द पढ़े जाते हैं :

‘अ. ऊ. यु. बिल.ला.हि मि.नश.शै.ता—  
निर.र.जीम

أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ

“मैं अल्लाह से दुतकारे हुए शैतान के प्रति शरण माँगता हूँ।”

इस के बाद कुर्झान शरीफ़ की पहली सूरत यानि सूरा फातिहा पढ़ी जाती है, यह नमाज़ का अनिवार्य अंग है, इसको हर रक़अत में पढ़ना होता है। यह सूरत इस प्रकार है :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

رَحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ لَا غَيْرَ

إِلَهِنَا الصِّرَاطُ الْمُسْتَقِيمُ ۝

الْمَغْضُوبُ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالُّونَ ۝

“अल्लाह के नाम से, (जो) अपार दयालु, सतत कृपालु (है)।

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो जहानों का रब,
2. अपार दयालु, सतत कृपालु,
3. प्रतिफल के दिन का मालिक है।
4. हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझी से सहायता माँगते हैं।
5. हम को सीधे मार्ग पर चला,
6. उन लोगों के मार्ग पर जिन को तू ने (दिव्य वरदानों द्वारा) पुरस्कृत किया,
7. न उनके (मार्ग पर) जिन पर प्रकोप उतरा, और न पथभ्रष्टों के।”

सूरत की समाप्ति पर ‘आमीन’ पुकारा जाता है, यानि ऐसा ही हो।

इसके बाद कुर्झान शरीफ़ का कोई सा हिस्सा, जो याद हो, पढ़ा जाता है। आम तौर पर कुर्झान शरीफ़ के आखिरी पारे से कोई छोटी सूरत चुनी जाती

है<sup>1</sup>, जो लोग कुर्अन शरीफ नहीं जानते उन्हें सूरा अल-इख़्व़ान स पढ़ने की सलाह दी जाती है। वह सूरत यों है :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ  
اللَّهُ الصَّمَدُ  
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ  
وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُواً أَحَدٌ

“अल्लाह के नाम से, जो अपार दयालु, सतत कृपालु है।

1. कह : वह—अल्लाह एक है !
2. अल्लाह वह है जिस पर सभी आश्रित हैं।
3. फिर 'اَكْبَر' अल.ला.हु अक्बर कहते हुए नमाजी झुक जाता है, यहां तक कि उसकी हथेलियां उसके घुटनों पर टिक जाती हैं। इस मुद्रा को रुकूअ (छायाचित्र—घ) कहा जाता है, इस मुद्रा में अल्लाह की महिमा और उसके प्रभुत्व का गुणगान कम से कम तीन बार किया जाता है, जिस के शब्द ये हैं :

سُبْحَانَ رَبِّ الْعَظِيمِ

سُبْح.हा.न रब.बि.यल—अ.जीम

“मेरे रब की महिमा हो, (जो) सब से महान (है)।”

4. इस के बाद नमाजी निम्न लिखित शब्दों को दोहराते हुए फिर से उठ खड़ा होता है :

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

1. हग ने इस पुस्तिका के अन्तिम भाग में कुछ कुआनी दुआएं दरज की हैं, उन से भी यही काम लिया जा सकता है।

स.मि. 'अल्-ला.हु.लि.मन् ह.मि.दह रब्.ब.ना ल.कल्-हमृद  
 'अल्लाह उसकी सुनता है जो उसकी स्तुति करता है। हमारे रब! सारी  
 प्रशंसा तेरे ही लिए हैं।'

5. इसके बाद नमाज़ी 'اَكْبَرُ' अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदे में  
 चला जाता है, वह इस तरह कि उसके दोनों पाँव की उंगलियां, दोनों घुटने,  
 दोनों हाथ और माथा ज़मीन से लग जाते हैं (छायाचित्र-ड)। निम्न  
 लिखित शब्दों को सजदे में कम से कम तीन बार दोहराया जाता है :

**سُبْحَانَ رَبِّيْ أَعْلَى**

सु.ब.हा.न रब्.बि.यल्. 'अ.ला

'मेरे रब की महिमा हो! (जो) सर्वोच्च (है)।

रुकूअ या सजदा में उपरोक्त ज़िक्र (प्रभु-स्तुति) के स्थान पर यह ज़िक्र  
 भी पढ़ा जा सकता है :

**سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِنِي**

सु.ब.हा.न.कल्-ला.हुम्.म रब्.ब.ना व बि.हमृ.दि.क अल्-ला.हुम्.मग्.फिर्-ली  
 'तेरी महिमा हो, ऐ अल्लाह, हमारे रब! और स्तुति तेरे ही लिए है; ऐ  
 अल्लाह! मेरा संरक्षण कर।'

6. इसके बाद 'اَكْبَرُ' अल्लाहु अकबर कहते हुए जलसा (छायाचित्र-च)  
 में चला जाता है, यानि थोड़ी देर के लिए बैठने की मुद्रा इखिलायार कर लेता  
 है। इसमें बायें पाँव का बाहरी हिस्सा ज़मीन के साथ और दायां पाँव खड़ा  
 रहता है जबकि उसकी उंगलियां ज़मीन से लगी रहती हैं। दो हाथ दो  
 घुटनों पर रखे जाते हैं। इस मुद्रा में यह दुआ पढ़ी जाती है :

**اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِنِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي  
 وَارْزُقْنِي وَارْفَعْنِي وَاجْبِرْنِي**

अल्.ला.हुम्.मग्-फिर्.ली वर्.हमृ.नी वह.दि.नी व आ.फि.नी  
 वर्.जुक्.नी वज्.बुर्.नी वर्.फअ.नी

'ऐ अल्लाह! मेरा संरक्षण कर, और मुझ पर दयादृष्टि कर, और मुझे मार्ग  
 दिखा, और मुझे निश्चन्तता प्रदान कर और मुझे जीविका दे, और मुझे  
 उच्चता प्रदान कर, और मेरे काम संवार दे।'

7. इसके बाद नमाज़ी **بِرْكَاتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ** अल्लाहु अकबर कहते हुए पुनः सजदे में चला जाता है, और वही सब करता है जो पहले सजदे में किया था। सजदा विनप्रता की चरम सीमा है, उससे अधिक भक्ति झुक नहीं सकता। अतएव हदीस में आता है :

**Qal Rasoolu الله ﷺ Aqrab**  
**مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ**  
**وَهُوَ مَاجِدٌ فَأَكْثِرُ وَالدُّعَاءَ**  
 "अल्लाह के रसूल<sup>सल्ल</sup>ने फरमाया :  
 सजदे में बन्दा अपने रब के सब  
 से ज्यादा करीब होता है, अतः  
 अन्य मुद्राओं की अपेक्षा इस मुद्रा  
 में अल्लाह से सर्वाधिक दुआएं  
 माँगो।" (मु.—मिशा० 4:14)

8. दूसरे सजदे के साथ एक रकअत पूरी हो जाती है। इसके बाद **بِرْكَاتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ** अल्लाहु अकबर कहते हुए नमाज़ी दूसरी रकअत के लिए उठ खड़ा होता है, और सूरा फातिहा से शुरू कर रकअत को उसी तरह ख़त्म करता है जैसे पहले की थी।

9. जब दूसरी रकअत पूरी हो जाती है तो नमाज़ी जलसा की मुद्रा में ही बैठा रहता है, इसको **क़अदह** (छायाचित्र—च) कहते हैं, इस मुद्रा में एक विशेष दुआ पढ़ी जाती है जिसको अत्-त.शह.हुद कहते हैं, वह दुआ यों है :

अत्.त.हि.या.तु. लिल.ला.हि  
 वस्.स.ल.वा.तु. वत्.त.य.यि.बा.तु.  
 अस्.स.ला.मु 'अ.ल.य.क अ.य.यु.हन्.  
 न.बी.यु व रह.म.तुल.ला.हि व  
 ब.र.का.तुहू अस्.स.ला.मु 'अ.लै.ना  
 व 'अ.ला अि.बा.दिल—ला.हिस्—  
 सा.लि.ही.न अश.ह.दु अन ला  
 इ.ला.ह इल.लल.ला.हु व अश.ह.दृ  
 अन्.ना मु.हम्.म.दन 'अब.दु.हू व  
 र.सू.लु.हू

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا  
 وَالصَّلواتُ وَالطَّيَّباتُ السَّلَامُ  
 عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ  
 اللهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا  
 وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ  
 أَشْهُدُ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَشْهُدُ  
 أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

'सब इबादतें (जापसनाएं) अल्लाह के लिए हैं; शब्दों द्वारा हों या शारीरिक मुद्राओं द्वारा या माली कुर्बानियों द्वारा। ऐ नबी<sup>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup>! तुझ पर सलामती हो, और अल्लाह की दयालुता, और उसकी बरकतें। हम पर सलामती हो और अल्लाह के नेक बन्दों पर। और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद<sup>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup> अल्लाह का बन्दा और उसका पैग़म्बर है।'

10. अगर नमाजी तीन या चार रकअत वाली नमाज़ पढ़ रहा है, तो वह ऊपर वाली दुआ के बाद 'اَكْبِرْ اَللَّهُ اَكْبَرْ' अल्लाहु अकबर कहता हुआ उठ खड़ा होगा, और तीसरी या चौथी रकअत मुकम्मल करेगा। अगर दो ही रकअत पढ़ना हो तो वह बैठा रहेगा और निम्न लिखित ज़िक्र पढ़ेगा, इस ज़िक्र को असू.सू.ला. 'अ.लन्-न.बी' (प्यारे नबी पर दर्लद) कहा जाता है :

अल.ला.हुम्.म सल.लि 'अ.ला

मु.हम्.म.दिन व 'अ.ला आ.लि

मु.हम्.म.दिन क.मा सल.लै.त

'अ.ला इब.रा.ही.म व 'अ.ला आ.लि

इब.रा.ही.म इन.न.क ह.मी.दुन

म.जी.द

अल.ला.हुम्.म बा.रिक 'अ.ला

मु.हम्.म.दिन व 'अ.ला आ.लि

मु.हम्.म.दिन क.मा बा.रक.त

'अ.ला इब.रा.ही.म व 'अ.ला आ.लि

इब.रा.ही.म इन.न.क ह.मी.दुन

म.जी.द

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّعَلَى

أَلْ مُحَمَّدَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى

إِبْرَاهِيمَ وَّعَلَى أَلْ إِبْرَاهِيمَ

إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ

عَلَى مُحَمَّدٍ وَّعَلَى أَلْ مُحَمَّدَ كَمَا

بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى أَلْ

إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

'ऐ अल्लाह! मुहम्मद<sup>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup>पर और मुहम्मद<sup>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup>के सच्चे अनुयायिओं पर दयादृष्टि कर, जिस तरह तू ने इबराहीम<sup>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup>और इबराहीम<sup>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup>के सच्चे अनुयायिओं पर दयादृष्टि की; निस्संदेह तू ही स्तुति का स्वामी और तू ही प्रतिष्ठावान है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद<sup>صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ</sup>और उसके सच्चे अनुयायिओं को बरकत दे जिस

तरह तू ने इबराहीम<sup>अस्स</sup> और उसके सच्चे अनुयायिओं को बरकत दी; निस्संदेह तू ही स्तुति का स्वामी और तू ही प्रतिष्ठावान है।

11. इसके बाद आम तौर पर यह दुआ माँगी जाती है :

रब्.विज्—'अल्.नी.मु.की.मस्—स.ला—  
ति व मिन जुर्.री.य.ती रब्.ब.ना व  
त.कब्.बल् दु.आ.अ रब्.ब.नग्—फिर्—  
ली व लि.वा.लि.दै.य व लिल्.मु'अ—  
मि.नी.न यौ.म य.कू.मुल्.हि.साब

سَبَّابٌ اجْعَلْنِي مُقِيمًا الصَّلَاةَ وَمِنْ  
ذُرَيْتَنِي مُطْرَبَنَا وَتَقْبَلْ دُعَائِنَا

سَبَّابَنَا اغْفُرْنِي وَلِوَالِدَائِي وَلِلْمُؤْمِنِينَ  
يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

'ऐ मेरे रब! मुझे और मेरी सन्तान को नमाज कायम करने वाला बना; हमारे रब! मेरी प्रार्थना कबूल कर; ऐ हमारे रब! मेरा संरक्षण कर और मेरे माता—पिता का और सब ईमानवालों का जिस दिन हिसाब कायम हो।'

इसके बाद नमाजी जो दुआ चाहे माँग सकता है। हदीस की निम्न लिखित दुआ सब के लिए प्रयोज्य है :

अल्.ला.हुम्.म इन्.नी अ.‘आ.जु—  
बि.क मि.नल्—हम्.मि वल—हुज.नि  
व अ.‘आ.जु.बि.क मि.नल्—अज्.जि  
वल—क.स.लि व अ.‘आ.जु.बि.क  
मि.नल्—जुब.नि वल—बुख्.लि व  
अ.‘आ.जु बि.क मिन् ग.ल.ब.तिद—  
दै.नि व कह.रिर्—रि.जा.लि अल.  
ला—हुम्.मक्.फि.नी बि.ह.ला.लि.क  
‘अन् ह.रा.मि.क व अग्.नि.नी बि.  
फज्.लि.क ‘अंम्—मन सि.वा.क

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمَةِ  
وَالْحُزْنِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ  
وَالْكَسْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ  
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الْكَبِيرِ  
وَقَهْرِ الرِّجَالِ اللَّهُمَّ أَكْفِنِي  
بِعَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي  
بِفَضْلِكَ عَنْ بَحْرِكَ سِوَالَكَ

'ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण माँगता हूँ चिन्ता और संताप के प्रति, और मैं तेरी शरण माँगता हूँ दुर्बलता और आलस्य के प्रति, और मैं तेरी शरण माँगता हूँ कायरता और कंजूसी के प्रति, और मैं तेरी शरण माँगता हूँ कर्ज द्वारा

वशीभूत हो जाने और लोगों के अत्याचार के प्रति; ऐ अल्लाह! मुझे उसके प्रति संतुष्ट कर दे जिसे तू ने हलाल (वैध) ठहराया, और उस से दूर कर दे जिसे तू ने हराम (अवैध) ठहराया, और अपनी दयालुता से मुझे आवश्यकतारहित कर दे सिवाय तेरे।'

12. इसी मुद्रा का अन्तिम ज़िक्र तस्लीम (छायाचित्र—छ) है, यानि ये शब्द कहना :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ

अस्-स.ला.मु 'अ.लै.कुम व रह.म.तुल-लाह

'तुम पर अल्लाह की शांति एवं दयालुता वर्षित हो!' ।

इन शब्दों का उच्चारण करते हुए नमाजी अपना चेहरा पहले दायीं ओर फेरता है, फिर यही शब्द दोहराते हुए चेहरा बायीं ओर फेरता है। इस तरह नमाजी की नमाज समाप्त हो जाती है।

## 8. दुआए कुनूत

वित्र तीन रकअतें हैं जिनको आम तौर पर इशाअ या तहज्जुद की नमाज के अन्त पर पढ़ा जाता है। वित्र की तीसरी रकअत में रुकूआ में जाने से पहले निम्न लिखित दुआ पढ़ी जाती है, इस दुआ को कुनूत कहते हैं :

अल.ला.हुम-मह.दि.नी फी.मन  
ह.दै.त व 'आ.फि.नी फी.मन  
'आ.फै.त व त.वल.ल.नी फी.मन  
त.वल.लै.त व बा.रिक् ली फी.मा  
आ.तै.त व कि.नी शर.र मा क.जै.त  
इन.न.क तक.जी व ला युक.जा  
'अ.लै.क इन.न.हू ला य.जिल.लु  
मं-वा.लै.त त.बा.रक.त रब.ब.ना  
व त. 'आ.लै.त

اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِي  
فِيمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّتَ  
وَبَا إِرْكَلٍ فِيمَا أَعْطَيْتَ وَقِنِي  
شَرَّ مَا قَضَيْتَ إِنَّكَ لَتَعْفُنِي لَا يَعْفُنِي  
عَلَيْكَ إِنَّكَ لَا يَذِلُّكَ مَنْ وَالْيَتَ  
تَبَارَكَتْ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ

‘ऐ अल्लाह! मेरा उन लोगों के बीच मार्गदर्शन कर जिनको तूने मार्ग दिखाया, और मुझे उन लोगों के बीच सुरक्षा प्रदान कर जिन को तू ने सुरक्षित बनाया, और मुझे उन लोगों के बीच (अपनी) मित्रता प्रदान कर जिन को तू ने मित्र बनाया, और मुझे उन लोगों के बीच बरकत प्रदान कर जिन को तू ने बरकत वाला बनाया, और मुझे उस चीज़ में बरकत दे जो तू ने प्रदान की है और मुझे उसकी बुराई से बचा जिसका तू ने आदेश दिया है, क्योंकि तू ही आदेश देता है और तेरे आदेश के विरुद्ध कोई आदेश नहीं। निस्संदेह वह कभी अपमानित नहीं हो सकता जिसका तू मित्र बने; ऐ हमारे रब! तू बरकत वाला एवं सर्वोच्च है।’

एक और कुनूत यह है :

अल्-ला.हुम्.म इन्.ना नस्.त.अी—  
नु.क व नस्.त.ग.फि.रु.क व नु.अ.मि.नु  
बि.क व न.त.वक्.क.लु ‘अ.लै.क व  
नु.स.नी ‘अ.लै.कल्-खै.र व नश—  
कु.रु.क व ला नक्.फु.रु.क व नख—  
ल.अु व नत्.रु.कु मय्.यफ्.जु.रु.क  
अल्.ला.हुम्.म इय्.या.क नअ.बु.दु व  
ल.क नु.सल्.ली व नस्.जु.दु व  
इ.लै.क नस्.आ व नह्.फि.दु व  
नर्.जू रह्.म.त.क व नख्.शा  
‘अ.जा.ब.क इन्.न ‘अ.जा.ब.क  
बिल्-कुफ्.फा.रि मुल्.हिक

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مَا تَعْلَمُ وَأَنْتَ تَعْلَمُ  
وَمَا نَهَا يَدُكَ وَأَنْتَ تَوْكِيدُ  
عَلَيْكَ الْخَيْرُ وَأَنْشَكْرُوكَ وَلَا تُنَكِّرُوكَ  
وَنَخْلُمُ وَنَذْرُوكَ مَنْ يَغْهِرُوكَ  
اللَّهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِلَيْكَ نُصَلِّي  
فَنَسْجُدُ وَإِلَيْكَ نَسْعَى وَنَحْفِدُ  
نَرْجُوا مَرْحَمَتَكَ وَنَغْشِي عَذَابَكَ  
إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ بِهِ

‘ऐ अल्लाह! हम तुझ से मदद मांगते हैं, और तेरा संरक्षण चाहते हैं, और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा करते हैं, और तेरा गुणगान करते हैं, और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं करते, हम उस से विलग हैं और उसका परित्याग करते हैं जो तेरी अवज्ञा करता है। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत और तेरी ही उपासना करते हैं और तेरे ही आगे सजदा

करते हैं, और तेरी (दयालुता की) ओर लपकते हैं, और तेरी आङ्गा के पालन में तेज़ हैं, और हम तेरी दयादृष्टि की उम्मीद रखते हैं, और तेरी सज़ा से डरते हैं, क्योंकि तेरी सज़ा काफिरों पर छा जाती है।'

### 9. नमाज़ के बाद के अज़कार (प्रभु—स्तुति)

नमाज़ के बाद आम तौर पर दुआ के लिए हाथ उठाये जाते हैं, लेकिन किसी भी हडीस से साबित नहीं कि हज़रत पैगम्बर श्री सल्ली ऐसा ही किया करते थे। हाँ! नमाज़ के बाद बाज़ अज़कार पढ़ने का ज़रूर उल्लेख है :

अस्.तग्.फि.रुल्-ला.ह रब्.बी मिन  
कुल्.लि ज़न्.बिन व अ.तू.बु  
इ.लैह

اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ  
وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

'मैं अल्लाह की शरण मांगता हूँ मेर रब, प्रत्येक गुनाह के प्रति और मैं उसी की ओर पलटता हूँ।'

अल्.ला.हुम्.म अन्.तस्-स.ला.मु व  
मिन्.कस्-स.ला.मु त.बा.रक्.त रब्.  
ब.ना व त.आ.लै.त या ज़ल्-  
ज.ला.लि वल्-इक्.रा.म

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ فَمِنْكَ السَّلَامُ  
تَبَارَكَتْ سَبَاتْ نَعَالِيَّةَ سَبَا  
ذَالْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

'ऐ अल्लाह! तू ही शांतिदाता है, और तेरी ही ओर से शांति का आगमन है; तू बरकत वाला है, ऐ हमारे रब! और तू सर्वोच्च है, ऐ महिमा एवं प्रतिष्ठा के स्वामी।'

ला इ.ला.ह इल्.लल्-लाहु  
वह.द.हू ला श.री.क ल.हू ल.हुल्-  
मुल्.कु वल्-हम्.दु व हु.व अ.ला  
कुल्.लि शै.अिन क.दीरः

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
لَهُ كُلُّ الْمُلْكُ وَالْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى  
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

अल्.ला.हुम्.म ला मा.नि.अ लि.मा  
आ.तै.त व ला मु.अ.ति.य लि.मा  
म.नअ.त व ला यन्.फ.अु जल्.जद—  
दि मिन्.कल्—जद.दु

اللَّهُمَّ لَا مَا نَعْلَمُ يَعْلَمُ وَلَا  
يَعْلَمُ لِمَا نَعْلَمُ وَلَا يَنْفَعُ  
ذَلِكَ عَجَزٌ مِّنْكَ الْعَجَزُ

‘अल्लाह के सिवाय कोई ईश्वर नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं; राज्य उसी का है, वही स्तुति का अधिकारी है, और उसको हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है। ऐ अल्लाह! कोई नहीं जो रोक सके जो कुछ तू प्रदान करे, और कोई नहीं जो दे सके जो कुछ तू रोक ले, किसी प्रतिष्ठावान को उसकी प्रतिष्ठा तेरे विरुद्ध लाभ नहीं दे सकती।’

इन के साथ आ.य.तुल—कुर.सीय (2:255) को भी जोड़ा जा सकता है, जिस में प्रभु की महिमा और उसके सदगुणों का अति सुन्दर चित्रण है :

अल्.ला.हु ला इ.ला.ह इल्.ला हु.व  
अल्—है.युल—कै.यूम ला ता.खु.जु—  
हू सि.न.तुंव—व ला नौ.म ल.हू मा  
फि.स—स.मा.वा.ति व मा फि.ल—  
अर्.ज़ मन्. जल्—ल.ज़ी यश्.फ.अु  
अिन्.द.हू इल्.ला बि.इज्.नि.ही  
य.अ.ल.मु मा बै.न ए.दी.हिम व मा  
खल्.फ.हुम व ला यु.ही.तू.न बि.शै.  
अिं.म—मिन अिल्.मि.ही इल्.ला  
बि.मा.शा.अ व.सि.‘अ कुर.सी.  
यु—हुस्—स.मा.वा.ति वल—अर्.ज व  
ला य.आ.दु.हू हिफ्.जु.हु.मा व  
हु.वल—अ.ली.युल—अ.जीम

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَقُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذْهُ  
سِنَةٌ وَلَا تُؤْمِنُ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا  
فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَلِكُو يَشْفَعُ عِنْدَهُ  
إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا  
خَلْفُهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا  
بِمَا شَاءَ وَسَعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ  
وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمْ وَهُوَ عَلَىٰ الْعَظِيمُ<sup>۱۷۰</sup>

“अल्लाह—उसके सिवाय कोई ईश्वर नहीं, सदा जीवन्त, स्वयं स्थिर स्थिरता प्रदान करने वाला। उसे न तो ऊँघ वशीभूत करती है और न नींद। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कौन है जो

उसके पास सिवाय उसकी अनुमति के सिफारिश करे? वह जानता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके ज्ञान में से किसी चीज़ पर पार नहीं पा सकते सिवाय उसके जो वह चाहे। उसका ज्ञान आकाशों और धरती पर छाया हुआ है, और उन दोनों का संरक्षण उसे थकाता नहीं। और वह सर्वोच्च, परममहान है।"

## जुमा की नमाज

इस्लाम में कोई सबत (sabbath) नहीं। यानि ऐसा कोई खास दिन नहीं जो सिर्फ़ प्रार्थना के लिए निश्चित हो। जुमा की नमाज़ भी बिल्कुल वैसी ही है जैसी रोज़ाना पढ़ी जाने वाली अन्य नमाजें। जुमा की नमाज़ ने जुहर की नमाज़ का स्थान ले लिया है। जुमा के दिन मुसलमानों को बड़ी संख्या में नमाज़ के लिए इकट्ठा होना होता है, इसी विशेषता के कारण शुक्रवार को यौमुल—जु.मु.अ यानि जमा या इकट्ठा होने वाला दिन कहा गया है। यों तो पांचों नमाजें फर्ज़ हैं, लेकिन जुमा की नमाज़ का कुर्�आन शरीफ़ में अलग से हुक्म है : "ऐ लोगो ! जो ईमान लाये हो, जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए पुकारा जाये, तो अल्लाह की याद के लिए जल्दी करो, और कारोबार छोड़ दो। यही तुम्हारे लिए उत्तम है, यदि तुम जानो।" (62:9)। कोई भी दूसरी नमाज़ विशेष परिस्थितियों में अकले पढ़ी जा सकती है, लेकिन जुमा की नमाज़ नहीं, क्योंकि वह मूलतः एक सामूहिक नमाज़ है। जुमा की नमाज़ को किसी भी मस्जिद में आदा किया जा सकता है, चाहे मस्जिद मुहल्ले की हो, गाँव की हो या शहर की; जहां मस्जिद नहीं वहां जुमा नमाज़ को किसी भी मुनासिब जगह पढ़ा जा सकता है। आम परंपरा यही है कि लोग किसी केन्द्रीय मस्जिद (जामा मस्जिद) में इकट्ठा होते हैं। इस साप्ताहिक सम्मेलन का उद्देश्य यही है कि मुसलमान एक दूसर से मिलें और परस्पर संपर्क स्थापित करें।

जुमा की नमाज़ का एक विशेष अंग खुतबा (शब्दशः, भाषण) या प्रवचन है, जिसको इमाम नमाज़ से पहले पढ़ता है। पहली अज्ञान के साथ ही लोग इकट्ठा होने लगते हैं, और दो रक्तत सुन्नत अदा करते हैं। जो लोग खुतबा शुरू होने के बाद पहुंचें उनके लिए भी ज़रूरी है कि वह जल्दी

जल्दी जल्दी दो रक्खत सन्नत अदा करें। जब इमाम सुन्नत पढ़ लेता है तो मृ. अज़्ज़. जिन<sup>1</sup> दूसरी अजान पुकारता है, इस दौरान इमाम बैठा रहता है। ज्यों ही अजान ख़त्म होती है तो इमाम लोगों की ओर मुँह कर खुतबा के लिए खड़ा हो जाता है। खुतबा 'कलगा शहादत' से यों शुरू किया जाता है :

अश. ह. दु अन. ला इ. ला. ह इल. लल-

ला. ह व अश. ह. दु अन. न मु. हम. म-

दन अब. दु. ह व र. सू. लु. हू।

अम्. मा बअ. दु फ. अ. आ. जु बिल-

ला. हि मि. नश-शै. ता. निर-र. जीम

बिस. मिल. ला. हिर. रह. मा. निर-रहीम

اَشْهَدُ اَنْ لَا إِلَهَ اِلَّا اللَّهُ  
وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَاَشْهَدُ  
اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ  
اَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ  
الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ لِسُمِّ الْلَّهِ  
الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई ईश्वर नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद<sup>सल्ल</sup>अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल है। इसके बाद मैं शापित शैतान के प्रति अल्लाह की शरण मांगता हूँ। मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो अपार दयालु, सतत कृपालु है।'

फिर इमाम कुर्�आन शरीफ का कोई भी भाग तिलावत कर लोगों के सामने उसकी व्याख्या बयान करता है। खुतबा सुननेवालों को खुतबा के दौरान शिष्टाचारपूर्वक ख़मोश बैठे रहने का आदेश है। मुस्लिम समुदाय के कल्याण से जुड़ा हुआ कोई भी विषय खुतबा में बयान किया जा सकता है। हज़रत पैग़म्बर<sup>ص</sup>श्री<sup>س</sup>ल्लने एक बार किसी व्यक्ति के निवेदन पर खुतबा में वर्षा के लिए दुआ मांगी, क्योंकि पानी के अभाव के कारण इन्सान और जानवर परेशान हो रहे थे।<sup>2</sup> खुतबा दो हिस्सों में दिया जाता है।<sup>3</sup> प्रवचन समाप्त कर इमाम कुछ देर के लिए बैठ जाता है, और फिर पुनः खड़े हो कर निम्न लिखित

1. अजान देनेवाला ; 2. देखो बुखारी 11:34 ; 3. देखो बुखारी 11:26

प्रार्थना पढ़ता है :

अल्.हम्.दु लिल्.ला.हि नह्.म.दु.हू  
व नस्.त.आ.नु.हू व नस्.तग्.फि.रु-  
हू व नुअ.मि.नु वि.ही व न.त.वक्-  
क.लु अ.लै.हि व न.आ॒जु विल-  
ला.हि मिन् शु.रु.रि अन्.फु.सि.ना  
व मिन् सै.यि.आ.ति आ.मा.लि.ना  
मंय्-यह्.दि.हिल्-ला.हु फ.ला  
मु.जिल्.ल ल.हू व मंय्.युज्.लिल्.हु  
फ.ला हा.दि.य ल.हू अल्.ला.हुम्-  
मन्.सुर मन्.न.स.र दी.न मु.हम्-  
म.दिन सल्.लल्-ला.हु अ.लै.हि व  
सल्.ल.म वज्.अल्.ना मिन्.हुम्  
अल्.ला.हुम्.मख्-जुल मन् ख.ज-  
ल दी.न मु.हम्.म.दिन सल्.लल्-  
ला.हु अ.लै.हि व सल्.लम व ला  
तज्.अल्.ना मिन्.हुम्

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَ  
سَلَّمَ عَلَيْهِ وَنَعُوذُ بِهِ وَشَوَّكْلٌ  
عَلَيْهِ وَنَعُوذُ بِإِنَّهِ مِنْ شَرِّ وَرِ  
أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَنْهَى إِنَّا مِنْ  
يَمْدُودٍ إِلَّا اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ  
يُضِلِّلُهُ فَلَا هَا دِيْعَ لَهُ اللَّهُمَّ افْصُوْ  
مَنْ نَصَرَ دِيْنَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاجْعَلْنَا مِنْهُمْ الْمُقْمَدَةَ  
لَهُذُلَّ مَنْ حَذَلَ دِيْنَ مُحَمَّدٍ صَلَّى  
اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَوْلَاتَجْعَلْنَا مِنْهُمْ

'सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है; हम उसी की प्रशंसा करते हैं, और उसी से मदद मांगते हैं, और उसी का संरक्षण चाहते हैं, और हम उसी पर ईमान लाते हैं, और हम उसी पर भरोसा रखते हैं, और हम हमारी आत्माओं के अनिष्ट के प्रति अल्लाह की शरण मांगते हैं और हमारे कर्मों की बुराई के प्रति भी; जिसको अल्लाह मार्ग दिखाए कोई नहीं जो उसे गुमराह करे, जिसको वह गुमराही में छोड़ दे कोई नहीं जो उसे मार्ग दिखाए। ऐ अल्लाह! उनकी सहायता कर जो मुहम्मद<sup>صل</sup>के धर्म की सहायता करते हैं, और हमें उन्हीं में से बना। ऐ अल्लाह! उनको निराश कर दे जो मुहम्मद<sup>صل</sup>के धर्म का अपमान करते हैं, और हमें उन में से न बना।'

इसके बाद इमाम दरूद (अस्-स.लाह 'अ.लन्-न.बी, देखो पृष्ठ 20) पढ़ता है, और फिर कुर्�আন শরীফ কী যহ আযত (16:90) ঔর কুছ অন্য

वाक्य पढ़ता है :

इन्‌. नल्‌-ला. ह या. मु. रु बिल्‌-अद्‌. लि  
वल्‌-इह. सा. नि व इ. ता. अि. जिल्‌. कुर्‌-  
बा व यन्‌. हा अ. निल्‌. फह. शा. अि वल्‌-  
मुन्‌. क. रि वल्‌-ब. गी य. अि. जु. कुम  
ल. अल्‌. ल. कुम त. जक्‌. क. रुन

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعُدْلِ وَالْإِحْسَانِ  
وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَا عَنِ  
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ  
عَلَّمْتُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

“अल्लाह तुम्हें न्याय का और परोपकार का और निकटवर्तियों को देने का आदेश देता है, और अश्लीलता और पाप-कर्म और विद्रोह से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम चेतो।”

अि. बा. दल्‌-ला. हि उज्‌. कु. रुल्‌-ला. ह  
यज्‌. कुर्‌. कुम वद्‌. औ. हु यस्‌. त. जिब  
ल. कुम व ल. जि. क. रुल्‌. ला. हि  
अक्‌. बर

عِبَادَ اللَّهِ أَذْكُرُ وَاللَّهُ يَذْكُرُكُمْ  
وَأَدْعُوكُمْ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ  
اللَّهِ أَكْبَرُ

‘ऐ अल्लाह के बन्दो! अल्लाह को याद करो, वह तुम्हें याद रखेगा; उसी को पुकारो, वह तुम्हारी पुकार सुनेगा। और निस्सांदेह अल्लाह का ज़िक्र (स्मरण) सब से बड़ा (शक्तिस्रोत) है।’

## खुतबे की भाषा

ईद के सिलसिले में कई घटनाएं ऐसी हैं जब हज़रत पैग़म्बरश्रीصل्लने खुतबे में मौके की ज़रूरत के अनुरूप सेना की तैयारी के या कोई अन्य आदेश दिये, और साथ ही साधारण उपदेश भी।<sup>1</sup> इन घटनाओं से यही सिद्ध होता है कि खुतबे का मुख्य उद्देश्य लोगों को शिक्षा देना, उनके अनदर ज़िम्मेदारी का एहसास जगाना, उनको सुखद और शांतिमय जीवन जीने के तरीके समझाना और हानि के मार्गों और कारणों से सावधान कराना है। अतः खुतबा ऐसी भाषा में दिया जाना चाहिए जिसको सुननेवाले समझते हों, गैर-अरबों के सामने अरबी भाषा में ख़तबा पढ़ना कोई अक़लमन्दी नहीं क्योंकि सुननेवाले उसको समझते ही नहीं। नमाज़ का मामला एक अलग

1. देखो तुख़ारी 13:6 ; 13:8

मामला है। खुतबे का बुनियादी मकसद उपदेश है, यानि लोगों को यह समझाना है कि वह अमुक परिस्थितियों में किन बातों पर अमल करें और किन बातों से बचें। या फिर लोगों को सही जीवन जीने की विधि बताना है, पराई भाषा में खुतबा देकर यह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। नमाज़ का मामला ऐसा नहीं, क्योंकि उस में पढ़े जाने वाले वाक्य गिने चुने हैं, जिनका अर्थ एक बालक भी महीने भर में जान जाता है। फिर नमाज़ की मुद्राएं स्वयं बहुत कुछ कह जाती हैं, नमाज़ी नामाज़ में अल्लाह की महिमा और स्तुति को बार बार दोहराता है, उसे अरबी शब्दों का अर्थ भली ही न आता हो लेकिन मुद्रा द्वारा भाव स्वतः मालूम पड़ जाता है। इस लिए ज़रूरी है कि लोग प्रवचन देने वाले की भाषा को समझते हों, ताकि वह जान लें कि उपदेश किया है। मुस्लिम समाज को शिक्षित करने के लिए तथा उसके अनदर जिन्दगी की रुह फूंकने के लिए जुमा का खुतबा बड़ा ही लाभदायक है।

खुतबा समाप्त होते ही इक़ामत पुकारी जाती है, और दो रकअत नमाज़ जमाअत से अदा की जाती है, जिस में इमाम पहले सूरा फ़ातिहा और फिर कुर्�आन शरीफ़ का कोई सा हिस्सा तिलावत करता है। यह तिलावत सुन्नत और शाम की नमाज़ों की तरह ऊँची आवाज़ में होती है। जुमा की नमाज़ मूलतः दो रकअत फ़र्ज ही है, लेकिन मस्जिद में दाखिल होते ही दो रकअत सुन्नत पढ़ी जाती है। अगर इमाम साहिब खुतबा शुरू कर चुके हों तब भी देर से आने वाले को जल्दी जल्दी दो रकअत सुन्नत अदा कर लेनी चाहिए।<sup>1</sup> जुमा के दो रकअत फ़र्ज अदा कर लेने के बाद भी दो रकअत सुन्नत पढ़ना होते हैं। इस बात का कहीं कोई आधार या प्रमाण नहीं कि जुमा की नमाज़ के बाद जुहर की नमाज़ भी पढ़ी जाए<sup>2</sup> जुमा की नमाज़ ने वास्तव में जुहर की नमाज़ का ही स्थान लिया हुआ है।

1. देखो बुखारी 11:32

2. इस प्रथा का जन्म इस ग़लत धारणा से हुआ है कि जुमा की नमाज़ सिर्फ़ शहर में ही अदा हो सकती है, वह भी तब जब हक्मत मुसलमानों की हो। हम दिखा चुके हैं कि जुमा की नमाज़ शहर में, ग़ाँव में या किसी भी अन्य जगह पढ़ी जा सकती है। और यह शर्त कि उस जगह मुसमानों का ही राज होन चाहिए, यह भी एक बेहूदा शर्त है। कुर्�आन और हदीस में जुमा—नमाज़ के आयोजन केलिए या किसी भी अन्य नमाज़ के लिए ऐसी कोई शर्त मौजूद नहीं।

## ईद की नमाज़

ईदें इस्लाम के वह दो महा पर्व हैं, जिनको धार्मिक अनुमोदन हासिल है। ईद शब्द 'अवद से निकला है जिस के माना है लौट कर आना, यानि वह खुशी जो बार बार लौट कर आए। पहली ईद को ईदुल-फित्र कहते हैं यह रमजान के रोज़ों के बाद पहली शवाल को होती है। दूसरी ईद को ईदुल-अज़हा यानि कुर्बानी वाली ईद कहते हैं, यह 10 जुलाहज्ज को यानि हज की समाप्ति पर मनाई जाती है। ईद के दिन भी दो रकअत नमाज़ जमाअत से पढ़ी जाती है, और नमाज़ की समाप्ति के बाद इमाम खुतबा देता है। ईद की नमाज़ की तैयारी बिल्कुल जुमा की नमाज़ जैसी होती है। ईद के दिन नमाज़ी नहाता है, अच्छे कपड़े पहनता है, खुशबू लगाता है, यानि साफ सुथरा होने के सारे उपाय करता है। ईद का समारोह चूंकि सब से बड़ा होता है, इस लिए इसका आयोजन किसी खुली जगह यानि ईद-गाह में होता है, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर ईद-नमाज़ के लिए मस्जिद को भी इस्तेमाल किया जा सकता है। ईद की नमाज़ में न अज्ञान होती है और न इकामत पुकारी जाती है। यों तो औरतें सब नमाज़ों तथा जुमा की नमाज़ में भी शामिल हो सकती हैं, लेकिन ईद के समारोह में शामिल होने का उन्हें खास हुक्म है। हज़रत पैगम्बर श्री सल्लने फ़रमाया है : 'लड़कियां, और वे युवतियां जिन्हों ने परदा धारण किया है, और वे जो रजसवला हैं, सब की सब मुसलमानों की ईद नमाज़ पर हाजिर हों' (देखो बुखारी 13:12)। ईद की नमाज़ सूर्योदय से लेकर दोपहर से पहले पहले किसी भी समय पढ़ी जासकती है। तात्पर्य यह कि ईद-नामज़ का समय नाशते का समय है।

ईद की नमाज़, जैसा कि हम बता चुके हैं, केवल दो रकअतों पर आधारित है, जिन को जमाअत के साथ अदा किया जाता है। नमाज़ में ईमाम पहले सूरा फ़ातिहा और फिर कुर्झान शरीफ का कोई सा भाग पढ़ता

1. तकबीर, ऊंची आवाज़ में 'بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اَللّٰہُ اکْبَرُ! पुकारना।

है। जुमा की तरह इसको भी ऊँची आवाज़ में पढ़ा जाता है। हम पहले बता चुके हैं कि ईद की नमाज़ में न अज्ञान होती है और न इकामत, लेकिन इस में नियमित तकबीरों के अलावा कुछ तकबीरें अतिरिक्त होती हैं। प्रमाणिकतम हदीस के अनुसार यह अतिरिक्त तकबीरें पहली रकअत में सात और दूसरी रकअत में पांच होती हैं।<sup>1</sup> ये तकबीरें सूरा फ़ातिहा की तिलावत (पाठ) से पहले पुकारी जाती हैं। इमाम इन तकबीरों को ऊँची आवाज़ में एक के बाद एक कर पुकारता है, और हर तकबीर के साथ अपने हाथ कानों तक उठाता है, और फिर उन्हें खुला छोड़ देता है। ईमाम के पीछे खड़े नमाज़ी भी इसी तरह हाथ उठाते और खुला छोड़ देते हैं। आखिरी तकबीर के बाद हाथ पहले की भाँति बांध लिये जाते हैं।

ईद नमाज़ के बाद ईद का खुतबा होता है, जुमा नमाज़ की तरह इसका विषय भी विविध होता है। ईद के खुतबे को जुमा के खुतबे की तरह दो भागों में विभाजित करना ज़रूरी नहीं। हज़रत पैग़म्बर श्रीसल्लैल्लहै ईद के दिन औरतों के समूह को अलग से संबोधित करते थे, जिनको स्पष्ट आदेश था कि वे सब ईद सम्मेलन में एकत्र हों चाहे उन्हें नमाज़ में शामिल होना हो या न होना हो (बुखारी 13:12)।

ईद वाले दिन मुसलमान (नमाज़ादि द्वारा) सिर्फ़ अल्लाह को ही याद नहीं करते, बल्कि उन्हें खास हुक्म है कि वह इस दिन अपने ग़रीब भाईयों को भी याद रखें। दोनों ईदों पर ग़रीबों की सहायता के लिए धन इकट्ठा करने की व्यवस्था है। ईदुल़्फ़ितर के दिन हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वह स.द.क़ह फ़ितर (यानि फ़ितर का दान) अदा करे, जो तीन या चार से गेहूँ, चावल, या कोई और प्रधान अन्न या उसके बराबर धन होता है। यह दान-राशि हर मुसलमान को अदा करना होती है चाहे वह बूढ़ा हो या सब से छोटा, स्त्री हो या पुरुष। इसे प्रत्येक घर का बड़ा घरवालों की ओर से अदा करता है। यह दान-राशि ईद की नमाज़ से पहले अदा करना ज़रूरी है। इस धन-राशि को जनकल्याण पर ख़र्च किया जाता था, एक हदीस के शब्द हैं : 'लोग इस दान-राशि को अदा करते ताकि इकट्ठा हो जाए, और

1. इस मामले में मतभेद है, लेकिन उसको अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए। बाज़ लोग एक अन्य हदीस के आधार पर पहली रकअत में चार और दूसरी रकअत में तीन अतिरिक्त तकबीरें पढ़ते हैं, इन तकबीरों को रुकूआँ में जाने से पहले पढ़ा जाता है। जिस हदीस के आधार पर ऐसा किया जाता है वह प्रमाणिक नहीं।

रह राशि भिखारियों में न जाटी जाती थी।

आज मुसलमानों ने इस आर्थिक व्यवस्था का परित्याग कर दिया है। नतीजा सामने है कि जनकल्पान और गरीबों के उद्धार संबंधी अनेक कार्य, जो आसानी से पूरे हो सकते थे, मुसलमान पूरा नहीं कर पाते। वही धन-राशि जिस को राष्ट्र के आर्थिक उत्थान में लगाया जा सकता था, बेकार जाया हो जाती है।

ईदुल-अज़्हा भी दान-पुण्य का अवसर उपलब्ध कराती है। हर मुसलमान को इस दिन ईद की नमाज़ के बाद कुर्बानी देना होती है, जिस से समाज के गरीब वर्ग को न सिर्फ अच्छा भोजन मिलता है, बल्कि जानवरों की खालों से जो धन-राशि जमा होती है उसे भी जन-कल्पान के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। जहाँ कुर्बानी का गोश्त जनसंख्या की ज़रूरतों से ज्यादा हो तो उसे सुखा कर या प्रशीतन द्वारा सुरक्षित कर खैराती कामों में लगाया जा सकता है।

## त.हज़्.जुद और त.रा.वीह

त.हज़्.जुद की नमाज़ आधी रात के बाद सोते से उठ कर पढ़ी जाती है, यह आठ रकअत पर आधारित है, जिनको दोदो कर अदा किया जाता है। इसके बाद तीन रकअत वित्र पढ़े जाते हैं। आम जनता की सुविधा के लिए वित्र की तीन रकअतें, जो असल में त.हज़्.जुद का ही हिस्सा हैं, इशाअ की नमाज़ के साथ ही जोड़ ली जाती हैं। अतः जिस ने इशाअ की नमाज़ के साथ वित्र पढ़ लिए वह त.हज़्.जुद में सिर्फ आठ रकअत ही पढ़े गा। लेकिन यदि सुबह करीब हो और आठ रकअत के लिए पर्याप्त समय न हो तो किसी भी दो रकअत के बाद त.हज़्.जुद को समाप्त किया जा सकता है। हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लने रमज़ान के महीने में त.हज़्.जुद के पढ़े जाने पर विशेष बल दिया है, इसी त.हज़्.जुद ने कालांतर में रमज़ान महीने की तरावीह नमाज़ का रूप ले लिया है। हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लके साथी त.हज़्.जुद के मामले में काफ़ी सक्रिय थे, हालांकि वह यह बात बखूबी जानते थे कि त.हज़्.जुद फर्ज नमाज़ नहीं। बाज़ लोग त.हज़्.जुद के लिए रात्री के अन्तिम भाग में मस्जिद आया करते। हदीस में है कि हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लने मस्जिद में एक छोटी

सी कोठरी बनवाई थी जहां वे रमज़ान में त.हज़्रुद अदा किया करते थे। एक रात जब वे त.हज़्रुद के लिए उठे तो कुछ लोगों ने जो उस वक्त मस्जिद में मौजूद थे नमाज़ में उनका अनुसरण किया, यानि उनके पीछे खड़े हो कर त.हज़्रुद को जमाअती रंग दे दिया। अगली रात नमाजियों की संख्या बढ़ गई और तीसरी रात संख्या और ज्यादा हो गई। चौथी रात हज़रत पैग़म्बरश्रीصل त.हज़्रुद के लिए बाहर न निकले, और फ़रमाया कहीं ऐसा न हो कि लोग त.हज़्रुद की नमाज़ को फ़र्ज बना लें, अतः बेहतर होगा कि त.हज़्रुद को घरों में ही पढ़ लिया करो। तात्पर्य यह कि इन तीन दिनों को छोड़ त.हज़्रुद की नमाज़ हज़रत पैग़म्बरश्रीصل के जीवन काल में, हज़रत अबू बकर<sup>رض</sup> की ख़िलाफ़त काल में और हज़रत उमर<sup>رض</sup> की ख़िलाफ़त कि प्रारंभिक काल में एक व्यक्तिगत नमाज़ ही रही। लेकिन आगे चल कर हज़रत उमर<sup>رض</sup> ने इस में एक परिवर्तन किया, जिसके फलस्वरूप यह नमाज़ एक जमाअत नमाज़ बन गई, और इसको इशाअ की नमाज़ के बाद पढ़ा जाने लगा, और इसको त.रा.वीह की संज्ञा दी गई।

अब दस्तूर यही है की त.रा.वीह की नमाज़ों में संपूर्ण कुर्�आन पढ़ा जाता है, और पाठ को रमज़ान के महीने में मुकम्मल कर लिया जाता है। ध्यान रहे कि एक ही रात में पूरा कुर्�आन ख़तम कर लेना हज़रत पैग़म्बरश्रीصل के स्पष्ट आदेशों की अवहेलना है। प्रारंभ में त.रा.वीह की रकअतों की संख्या 11 थी, यानि बल्किल वही संख्या जो त.हज़्रुद नमाज़ की है। कहा जाता है कि हज़रत उमर<sup>رض</sup>ने पहले 11 रकअत त.रा.वीह का ही हुक्म दिया था, लेकिन आगे चल कर इस को 20 रकअत बना दिया गया, 3 रकअत वित्र मिल जाने से कुल संख्या 23 रकअत हो गई।

## वर्षा के लिए नमाज़

हदीस में है कि एक बार काफ़ी लंबा सूखा पड़ा जिसने इन्सानों और जानवरों दोनों को दुखी कर दिया। किसी ने हज़रत पैग़म्बरश्रीصل से निवेदन किया कि वे वर्षा के लिए प्रार्थना करें। हज़रत पैग़म्बरश्रीصل उस समय मस्जिद में जुमा का खुतबा दे रहे थे, उन्होंने हाथ उठा कर अल्लाह से वर्षा के लिए दुआ मांगी (बुख़ारी 11:34)।

ऐसे ही एक अन्य हदीस में है कि हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लने अल्लाह से दुआ मांगी जब लगातार वर्षा हो रही थी। एक अन्य अवसर पर हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लने एक खुले मैदान में वर्षा हेतु दो रकअत जमाअत पढ़ाई, जिस में जुमा नमाज़ की भाँति सूरा फातिहा को ऊंची आवाज में पढ़ा (बुखारी 15:17)।

## ग्रहण के अवसर पर नमाज़

एक बार सूर्य को ग्रहण लगा तो हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लने सुहाबह को दो रकअत नमाज़ पढ़ाई। यह नमाज़ आम नमाजों से भिन्न थी, वह इस तरह कि इस में हर रकअत में दो कियाम और दो रुकूअ थे। पहले कियाम के बाद रुकूअ था जैसे हर नमाज़ में होता है, हाँ रुकूअ लंबा था, इसके बाद फिर कियाम था जिस में कुर्�আন शरीफ का कोई भाग पढ़ा गया, इसके बाद दूसरा रुकूअ किया गया जिस के बाद आम नमाजों की तरह सजदा किया गया (बुखारी 16:19)। ग्रहण की नमाज़ में कुर्�আন को जुमा नमाज़ की भाँति ऊँचे स्वर में पढ़ा गया। यह भी लिखा है कि नमाज़ की समाप्ति पर एक खुतबा भी दिया गया।

## नमाज़े जनाज़ह

जनाज़ह की नमाज़ हर मुसलमान मृतक पर पढ़ी जाती है, चाहे वह जवान हो या बूढ़ा, यहां तक कि उस नवजात शिशु पर भी जनाज़ह की नमाज़ पढ़ी जाती है जो सिर्फ कुछ ही मिनट या सैकंड जीवित रहा हो। जब कोई मर जाए तो उसके शव को साबून या किसी और कीटाणुनाशक पदार्थ से धोया जाए, और वह सारी गंदगी साफ़ कर दी जाए जो रोगादि से उत्पन्न हुई हो। धोते समय पहले शरीर के वे अंग धोये जाते हैं जो वुजू में धोये जाते हैं, उसके बाद सारा शरीर अच्छी तरह धोया जाता है। फिर शव को एक या दो सफेद चादरों का कफ़न दिया जाता है और खुशबू का प्रयोग भी किया जाता है। शहीदों और जंग में मरने वालों के शवों को न तो नहलाया जाता है और न ही कफ़न पहनाया जाता है। फिर सम्मान के लिए शव को चारपाई पर या अगर ज़रूरत हो तो ताबूत में रख कर कांधों पर

उठाया जाता है। शव को किसी और साधन द्वारा कबरिस्तान ले जाने की मनाही नहीं। हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लके आगे से एक यहूदी का जनाज़ह (अर्थी) गुज़रा, तो आप सम्मान हेतु खड़े हो गए, और अपने अनुयायिओं को यह बताया कि वह जनाज़ह को देख सम्मान हेतु उठ जाया करें चाहे जनाज़ह मुसलमान का हो या गैर-मुस्लिम का।

जनाज़ह के साथ कबरिस्तान तक जाना भी मुसलमान के कर्तव्यों में उसी तरह शामिल है, जिस तरह बीमार का हाल पूछने जाना। इस्लामी परिभाषा में इस कर्म को फर्ज किफाया कहा जाता है, यानि अगर यह कर्तव्य कुछ ही मुसलमान नभाएं तो अन्य मुसलानों पर कोई दोष न लगेगा। औरतों का जनाज़ह के साथ जाना मना तो नहीं, लेकिन उनका जनाज़ह के साथ कबरिस्तान जाना पसन्द नहीं किया जाता, वह इस लिए कि मर्दों की अपेक्ष औरतों का हृदय ज्यादा कोमल होता है, वह गम से टूट सकती हैं। नमाज़ जनाज़ह कहीं भी पढ़ी जा सकती है, मस्जिद में, किसी खुली जगह या स्वयं कबरिस्तान में (बशर्तेकि वहां काफी जगह हो)। नमाज़ जनाज़ह में शरीक होने वालों के लिए ज़रूरी है कि वह नमाज़ से पहले बुजू करें। ताबूत को सामने रखा जाता है, इमाम ताबूत के मध्य किबले की ओर मुँह कर खड़ा हो जाता है, बाकी लोग पंक्तियां बनाये इमाम के पीछे खड़े हो जाते हैं। पंक्तियों की संख्या ताक़ (विषम) होती है, हाँ! यदि लोग कम हों तो एक ही पंक्ति बनाना भी जाइज़ है। ध्यान रहे अन्य नमाज़ों की तरह इस में भी सभी का रुख़ किबला की ओर होता है। नमाज़ जनाज़ह का आरंभ भी अल्लाहु अकबर से होता है, जिस में आम नमाज़ों की तरह हाथ कानों तक उठाये जाते हैं। तकबीर के बाद इमाम और पीछे खड़े लोग इस्.तिफ़्.तह (दोखो पृ. 14) और सूरा फातिहा (दोखो पृ. 16) धीमी आवाज़ में पढ़ते हैं। फिर हाथ उठाये बिना ही दूसरी तकबीर पुकारी जाती है, उसके बाद दरूद (दोखो पृ. 20) धीमी आवाज़ में पढ़ा जाता है। फिर दूसरी तकबीर की तरह तीसरी तकबीर पुकारी जाती है, और फिर मरने वाले के लिए अल्लाह से प्रार्थना की जाती है। हदीस में कई प्रार्थनाएं उपलब्ध हैं, जिसका अर्थ यही हुआ कि कोई भी प्रार्थना पढ़ सकते हैं। निम्न लिखित प्रार्थना ज्यादा प्रचलित है :

अल्लाहुम्म. मगा—फिर लि. हय. यि. ना

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِعَيْنَانَا وَمَبْتَنَانَا وَشَاهِدَنَا

व मै.यि.ति.ना व शा.हि.दि.ना व  
गा.ओ.बि.ना व स.गी.रि.ना व  
क.बी.रि.ना व ज.क.रि.ना व उन-  
सा.ना अल.ला.हुम्.म मन अह.य्य-  
त.हू मिन्.ना फ.अह.यि.ही अ.लल-  
इस्.लाम व मन त.वफ्.फै.त.हू मिन्-  
ना फ.त.वफ्.फ.हू अ.लल—ईमान  
अल.ला.हुम्.म ला तह.रिम्.ना अज्-  
र.हू व ला तफ्.तिन्.ना बअ.द.हू

وَعَاهَدْنَا وَصَغِيرٌ نَا وَكَبِيرٌ نَا وَذَكَرْنَا  
وَأَنْتَنَا اللَّهُمَّ مَنْ أَخْيَيْتَنَا مِنْ  
فَأَخْيِيْدُ عَلَى الْإِسْلَامِ وَمَنْ تَوَقَّيْتَنَا  
مِنَافِتَوَقَّدَ عَلَى الْإِيمَانِ  
اللَّهُمَّ لَا تُخْرِمْنَا أَخْبَرْهُ  
وَلَا تَفْتِنْنَا بَعْدَهُ

‘ऐ अल्लाह! हमारे जिन्दों को और हमारे मुर्दों को संरक्षण प्रदान कर, और उनको जो हम मैं से हाजिर हैं और उनको जो हम में से गैर-हाजिर हैं, और हमारे छोटों को और हमारे बड़ों को, और हमारे मर्दों को और हमारी औरतों को। ऐ अल्लाह! जिसे तू हम में से जिन्दा रखे उसे इस्लाम पर जीवत रखयो, और जिस तू हम में से मृत्यु देदे उसे ईमान पर मारियो। ऐ अल्लाह! हमें उसके प्रतिफल से वंचित न कर, और हमें उसके बाद परीक्षा में न डाल।’

एक और प्रार्थना यह है :

अल-ला.हुम्.मग्-फि.र.ल.हू वर-  
हुम्.हु व आ.फि.ही वअ.फु 'अन.हु व  
अक्.रिम नु.जु.ल.हू व वस.सि.अ  
मद.ख.ल.हू व अग्-सिल.हु बिल-  
मा.अि वस-सल.जि वल-ब.र.दि व  
नक्.कि.ही मि.नल-ख.ता.या क.मा  
नक्.कै.तस-सौ.बल-अब.य.ज  
मि.नद-द.न.सि

اللَّهُمَّ اغْفِرْلَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِنَهُ  
وَاغْفِرْ عَنْهُ وَأَكْسُمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ  
مَدْخَلَهُ وَاعْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ  
وَالْبَرَدِ وَنَقِّبْهُ مِنْ النَّعْطَابِ  
كَمَا نَقَبْتَ التَّوْبَ الْأَبْيَضَ  
مِنَ الدَّسِّ

‘ऐ अल्लाह! इसे संरक्षण प्रदान कर, और इस पर रहम फरमा, और इसको अच्छी हालत में रख, और इसको क्षमा कर, और इसका सत्कार सम्मानजनक कर दे, और इसके दाखिल होने की जगह को खुला बना दे, और इसको पानी और बरफ और औलों से धो, और इसको गुनाहों से उसी तरह साफ कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा गंदगी से साफ किया जाता है।’

मरने वाले के लिए इन दुआओं के बाद चौथी तकबीर पुकारी जाती है, जिस के बाद अस्-सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह कहते हुए पहले दायीं ओर और अस्-सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह कहते हुए बायीं ओर मुँह फेरा जाता है। और नमाज़ जनाज़ह पूर्ण हो जाती है। अगर मरने वाले का शव मौजूद न हो तो उसके लिए नमाज़ जनाज़ह गायबाना पढ़ सकते हैं।

नमाज़ जनाज़ह हो जाने के बाद ताबूत को कबर तक ले जाया जाता है और मुर्द को दफना दिया जाता है। कबर इस तरह खोदी जाती है कि मुर्द का मुँह मवक्का की ओर कर उसको लिटा दिया जासके। कबर प्रायः चार या छः फुट गहरी होती है, इसके एक तरफ आयाताकार की खुदाई की जाती है, जिस में मुर्द को लिटाया जाता है। इसको लहद कहते हैं। इस में मुर्द को किबला की ओर मुँह कर लिटा दिया जाता है। यदि मुर्द संदूक या ताबूत में हो तो लहद खोदना ज़रूरी नहीं। हज़रत पैग़म्बरश्रीसल्लजब मुर्द को कबर में उतारते थे तो ये शब्द पढ़ते थे:

بِسْمِ اللَّهِ وَبِإِنْشَاءِهِ وَعَلَى سُنْتَةِ  
‘अ.ला सुन्.न.ति र.सू.लिल.लाह  
رَسُولِ اللَّهِ’

‘अल्लाह के नाम से और अल्लाह के साथ और अल्लाह के पैग़म्बर की सुन्नत के अनुसार।’

फिर कबर को मट्टी से भर दिया जाता है, और मरने वाले के लिए फिर प्रार्थना की जाती है, और लोग चले जाते हैं। बच्चे की नमाज़ जनाज़ह बालिग की नमाज़ जनाज़ह जैसी ही होती है, सिवाय इसके कि तीसरी तकबीर के बाद यह वाक्य पढ़ा जाता है :

اللَّهُمَّ لِجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَ سَلْفًا  
 اَلْلَهُمَّ اَنْجِرْهَا  
 اَلْلَهُمَّ اَنْجِرْهَا

अल.ला.हुम्—मज.अल.हु ल.ना  
 फ.रतन व स.ल.फन व अज.रन

(अगर लड़की हो तो अल.ला.हुम्—मज.अल.हु की जगह अल.ला.हुम्—मज.अल.हा पढ़ा जाए गा )

ऐ अल्लाह! इस को हमारे लिए अगले जहान में प्रतिफल का साधन बना, और हमारे आगे जाने वाला, और एक निधि और एक इनाम।'

## जन्म संबंधी संस्कार

दुध पिलाने से पहले नवजात शिशु के दायें कान में हल्के स्वर में अज्ञान (देखो पृ. 4) और बायें कान में इकामत (देखो पृ. 12) पुकारी जाती है।<sup>1</sup> आठवें दिन शिशु का मुण्डन किया जाता है, अगर बच्चे के माता-पिता सामर्थ्य रखते हों तो उसी सोंज अकीकह किया जाता है। बेटी हो तो एक भेड़ या बकरी कुर्बान की जाती, और बेटा हो तो दो, और गोशत रिश्तेदारों और दोस्तों में बांट दिया जाता है। लड़के का खुतना भी जितनी जल्दी हो जाए तो उत्तम है। खुतना की प्रथा हजरत इबराहीम अस्के ज़माना से चली आती है। चिकित्सा विज्ञान साक्षी है कि खुतना से इन्सान कई खतरनाक बीमारियों से बच जाता है।

## निकाह (विवाह) का खुतबा

इस्लाम धर्म के अनुसार निकाह पति और पत्नी के बीच एक पावन प्रतिज्ञा है; इसको कुर्�आन शरीफ ने स्पष्ट शब्दों में ‘एक दृढ़ वचन’ (4:21) कहा है। कोई भी अनुबन्ध या इकरार दो पक्षों की रजामन्दी से ही सम्पन्न होता है, इस लिए ज़रूरी है कि पति और पत्नी “परस्पर एक जाइज़ रीति से रजामन्द हों” (2:232)। अतः दोनों पक्ष जीवन साथी चुनने के मामले में पूरी तरह संतुष्ट हों, यह इस्लामी निकाह की पहली शर्त है। दूसरी शर्त यह है कि पति पत्नी का महर मुकर्रर करे, इसको कुर्�आन शरीफ ने ‘उपहार’ कहा

1. हंदीस में है कि इसके बाद बच्चे को घर का बुजुर्ग थोड़ा सा शहद या चबाई हुई खजूर चटाता है, इस संस्कार को ‘तहनीक’ कहते हैं। हजरत पैगम्बर श्रीमान् बच्चे के लिए दुआ और उसका नामकरण भी करते थे (बुखारी 71:1)।

है, जिसको पति विवाह के समय अपनी पत्नी को देता है (4:4)। महर की राशि में मर्द की हैसियत और औरत की हैसियत दोनों का ध्यान रखा जाता है। कभी से कभी महर एक मामूली लोहे का छल्ला भी हो सकता है, जैसा कि एक हदीस में वर्णित है (बुखारी 67:51), और अधिकतम राशि सोने का ढेर हो सकती है, जैसा कि कुर्�आन शरीफ में वर्णित है (4:20)। इस्लामी निकाह की तीसरी शर्त विवाह की सार्वजनिक घोषणा है, जिसके साथ खुतबा होता है जो विवाह समारोह को पावन बना देता है। खुतबे को त.शह.हुद के साथ इस प्रकार शुरू किया जाता है :

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰالَمِينَ  
وَسُلْطٰنُ عِزٰزٍ وَنُعْوَذُ بِاللّٰهِ مِنْ  
شُرُورِ أَنفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ  
أَعْمَالِنَا وَمِنْ تَهْدِيَةِ اللّٰهِ عَلَمَضِيلٍ  
لَهُ وَمِنْ تَبْصِيرِهِ فَلَا هَا دَيْلَهُ  
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ  
أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अल्-हम्.दु लिल्-ला.हि नह्.म.दु.हू  
व नस्.त.अी.नु.हू व नस्.तग्.फि.रु.हू  
व न.आ॒.जु बिल्-ला.हि मिन् शु.रु.रि  
अन्.फु.सि.ना व मिन् सै.यि.आ.ति  
आ.मा.लि.ना मंय्-यह्.दि.हिल्-ला.हु  
फ.ला मु.जिल्.ल ल.हू व मंय्-  
युज्.लिल्.हु फ.ला हा.दि.य ल.हू  
अश्.ह.दु अं.ला इ.ला.ह इल्-लल्-  
ला.हु व अश्.ह.दु अन्.न मु.हम्.म.दन  
अब्-दु.हू व र.सू.लु.हू।

'सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है; हम उसी की प्रशंसा करते हैं, और उसी से मदद मांगते हैं, और उसी का संरक्षण चाहते हैं, और हम उसी पर ईमान लाते हैं, और हम उसी पर भरोसा रखते हैं, और हम हमारी आत्माओं के अनिष्ट के प्रति अल्लाह की शरण मांगते हैं और हमारे कर्मों की बुराई के प्रति भी; जिसको अल्लाह मार्ग दिखाए कोई नहीं जो उसे गुमराह करे, जिसको वह गुमराही में छोड़ दे कोई नहीं जो उसे मार्ग दिखाए।

'मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई ईश्वर नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद<sup>स</sup>ल्ल अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल है।'

त. शह. हुद के बाद कुर्अन शरीफ की ये चार आयतें पढ़ी जाती हैं, यानि 3:102; 4:1 और 33:70, 71। इन आयतों में इन्सान को उसके कर्तव्य याद दिलाये गए हैं, बीच वाली आयत में औरतों के अधिकारों की रक्षा पर विशेष बल है। आयतें यों हैं :

या.ऐ.यु.हल—ल.ज़ी.न आ.म.नुत—  
त.कुल—ला.ह हक्.क तु.का.ति.ही  
व ला त.सू.तुन्.न इल.ला व अन—  
तुम सुस.लि.सून

يَا إِيَّاهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَتَقُوَّا اللَّهَ حَقًّا نُفْتَنْتُهُ  
وَلَا تَمُرُّنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ①

“ऐ ईमान लाने वालो ! अल्लाह के प्रति कर्तव्यनिष्ठा दिखओ जैसा कि उसके प्रति निष्ठा का हक है, और तुम न मरो किन्तु ऐसी हालत में कि तुम आज्ञाकारी हो !”

या.ऐ.यु.हन—ना.सुत—त.कू रब.ब.कु—  
मुल—ल.ज़ी ख.ल.क.कुम मिन्नफ.सिन  
वा.हि.द.तिन व ख.ल.क मिन.हा—  
ज़व.ज.हा व बस.स मिन.हु.मा रि.जा—  
लन क.सी.रन व नि.सा.अ, वत.त—  
कुल—ला.हल—ल.ज़ी त.सा.अ.लू.न  
बि.ही वल—अर.हा.म इन.नल—ला.ह  
का.न 'अ.लै.कुम र.की.बा

يَا إِيَّاهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي  
خَلَقَكُمْ مِنْ نُفُسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا  
زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً  
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ  
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ①

“ऐ लोगो ! अपने रब के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहो, जिस ने तुम को एक ही जीव से पैदा किया, और उसी (जाति) से उसका जोड़ा पैदा किया, और इन दोनों से अनेक पुरुष और स्त्रियां फैला दीं। और अल्लाह के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहो, जिसके द्वारा तुम परस्पर (अधिकार) माँगते हो, और रिश्तेदारियों के बन्धन (निभाओ)। निस्संदेह अल्लाह तुम पर नज़र रखे हुए है !”

या.ऐ.यु.हल—ल.ज़ी.न आ.म.नुत.त—  
कुल—ला.ह व कू.लू कौ.लन् स.दी.दन

يَا إِيَّاهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَتَقُوَّا اللَّهَ وَقُولُوا  
قُولًا سَيِّدًا

यु.स.लिह ल.कुम् आ.मा.ल.कुम् व  
यग.फिर ल.कुम जु.नू.ब.कुम व मंय-  
यु.ति.अिल-ला.ह व र.सू.ल.हू फ.कद  
फा.ज फौ.जन अ.जीमा

يُصْلِحُ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرُ لَكُمْ  
ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِيعُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ  
تَقَدُّ فَإِنَّ فَوْزًا عَظِيمًا ⑦

“ऐ लोगो ! जो ईमान लाये हो अल्लाह के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहो और सीधी बात कहो, वह तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्मों में सुधार करे देगा और तुम्हारे अपराध तुम्हें क्षमा कर देगा । और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की बात मान ली मानो वह महा सफलता को प्राप्त हो गया ।”

खुतबा में इन्ही आयतों की व्याख्या होनी चाहिए, और सुनने वालों को पति-पत्नी के अधिकारों और कर्तव्यों से अवगत कराना चाहिए । खुतबे के अन्त पर इस बात को एलान किया जाता है कि अमुक मर्द अमुक औरत के साथ इतने महर के इवज़ निकाह कर रहा है । इसके बाद मर्द और औरत दोनों से पूछा जाता है कि क्या वे इस संबंध को स्वकार करते हैं । जवाब हाँ में मिले तो निकाह यानि शादी की रसम पूरी हो जाती है । भारत में औरत की मर्जी उसका पिता या वली या कोई और रिश्तेदार पूछता है । यहां स्त्री-पुरुष से उनकी रजामंदी आम तौर पर खुतबे से पहले ही पूछ ली जाती है । अन्त पर सब लोग हाथ उठा कर नवविवाहित जोड़े के लिए अल्लाह से बरकतें मांगते हैं । हदीस की एक दुआ के शब्द ये हैं :

بَارَكَ اللَّهُ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَ  
व बा.र.कल-ला.हु व बा.र.क 'अ.लै.क  
व ज.म. 'अ बै.न.कु.मा बिल.खैर

جَمَعَ بَيْتَكُمَا بِالْخَيْرِ

‘अल्लाह अपनी बरकतें वर्षित करे, और अल्लाह तुझे बरकतों से लाभांवित करे, और तुम दोनों को उत्तम रीति से जोड़ दे ।’

इसके साथ कोई भी ऐसी दुआ जोड़ी जा सकती है जिस में नवविवाहित जोड़े की मंगलकामना हो या फिर कोई ऐसी दुआ जिस में सबके भले की याचना हो । निकाह की समाप्ति पर प्रायः उपस्थित लोगों में खजूर और शीरीनी बांटी जाती है । निकाह के बाद एक दावत दी जाती है जो वलीमा कहलाती है ।

## जानवरों का ज़िबह

जिन जानवरों के सेवन की इस्लामी शरीयत में इजाज़त है उन सब को विधिवत् ज़िबह करना ज़रूरी है, सिवाय मच्छली और दरयाई शिकार के। जानवर को इस तरीके से ज़िबाह किया जाए कि उसका सारा खून बाहर आजाए। जानवर पर छुरी चलाने से पहल बिस.मिल.ला.हि अल.ला.हु अक्.बर पुकारा जाता है, यानि 'अल्लाह' के नाम से—अल्लाह सब से बड़ा है।'

## کُرآنی دُعاۓ

नीचे हम कुछ कुर्अनी दुआएं दरज करते हैं। इनको नमाज़ में सूरा फ़ातिहा के बाद भी पढ़ा जा सकता है (देखो पृ. 17 जहां बताया गया है कि नमाज़ में सूरा फ़ातिहा के बाद कुर्अन शरीफ़ का कोई सा भाग पढ़ा जा सकता है)। इन दुआओं में से बाज़ का संबंध इन्सानी जीवन की विशेष परिस्थितियों से है, जैसा कि उनके भाव से जाहिर है:

رَبِّنَا اتَّهَادَ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً  
وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقَاتَ عَذَابَ النَّارِ

“ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई प्रदान कर और आखिरत में (भी) भलाई (दे), और हमें आग की यातना से बचा।” (2:201)

رَبِّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَ شَيْتُ أَقْدَامَنَا  
وَ انصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٦١﴾

“हमारे रब, हम पर धैर्य की वर्षा कर और हमारे पैर जमा दे, और काफिर कौम के विरुद्ध हमारी मदद कर” (2:250)

रब्.ब.ना ला तु.आ.खिज्.ना इन्.न—  
 सी.ना अव् अख्.ता.ना रब्.ब.ना व  
 ला तह.मिल् अ.लै.ना इस्.रन् क.मा  
 ह.मल्.त.हू अ.लल्—ल.ज़ी.न मिन  
 कब्.लि.ना रब्.ब.ना व ला तु.हम्.मिल्—  
 ना मा ला ता.क.त ल.ना बि.ही वअ—  
 फु अन्.ना वग्.फिर्.ल.ना वर्.हम्.ना  
 अन्.त मौ.ला.ना फन्.सुर्.ना अ.लल्—  
 कौ.मिल्—का.फि.रीन

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِيْنَا أَوْ أَخْطَلْنَا رَبَّنَا  
 وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ  
 عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحْمِلْنَا  
 مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفْ عَنْنَا فَقْهَةَ  
 وَاغْفِرْ لَنَا دَقْهَةَ وَاسْرَ حَدَنَا دَقْهَةَ أَنْتَ مَوْلَانَا  
 فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكُفَّارِينَ ۝

“ऐ हमारे रब ! हमें सज़ा न देना यदि हम भूल जाएं या चूक जाएं। ऐ हमारे रब ! और हम पर भारी बोझ न डाल जैसा तू ने उन पर डाला जो हम से पहले थे। ऐ हमारे रब ! और हम पर ऐसा बोझ न डाल जिसकी शक्ति हम में नहीं। और हमें क्षमा कर और हमारी रक्षा कर, और हम पर दयादृष्टि कर ! तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमें काफिर कौम पर विजय प्रदान कर।” (2:286)

रब्.ब.ना ला तु.जिग् कु.लू.ब.ना  
 बअ्.द इज् ह.दै.त.ना व हब् ल.ना  
 मिल्—ल.दुन्.क. रह.मह. इन्.न.क  
 अन्.तल्—वह.हाब

رَبَّنَا لَا تُزِعْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا  
 وَهُبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۝ اَنَّكَ  
 أَنْتَ الْوَهَابُ ①

“ऐ हमारे रब ! हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे—उसके बाद कि तू ने हमें मार्ग दिखाया, और अपने पास से हमें दयालुता प्रदान कर। निस्संदेह तू ही परम दाता है।” (3:8)

रब्.बि हब्. ली मिन ल.दुन्.क जुर्—  
 री.य.तन् तै.यि.ब.तन् इन्.न.क स.मी—  
 अुद्.दु'आ

رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذِرَّيَّةً  
 طِيبَةً ۝ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءٍ ②

“मेरे रब ! मुझे अपने यहां से पवित्र सत्तान प्रदान कर। निस्संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।” (3:38)

..... سَبَّنَا ..... اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَ اسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَ  
ثَدَّتْ أَقْدَامَنَا وَ اصْرَنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَفَرِينَ @  
रब्. ब. नग्-फिर्. ल. ना जु. नू. ब. ना व  
इस्. रा. क. ना फी अम्. रि. ना व  
सब्. बित अक्. दा. म. ना वन्-सुर्. ना  
अ. लल्-कौ. मिल्-का. फि. रीन

“हमारे रब ! हमारे गुनाह और जो हम से ज्यादती हुई हमें क्षमा कर दे, और हमारे कदम जमा दे और हमें इनकार करने वालों पर विजय प्रदान कर ।” (3:147)

رَبَّنَا إِنَّا سَيَعْنَا مُنَادِيًّا يُنادِي لِلْأَنْهَى  
آَنْ أَمْنُوا بِرَبِّكُمْ فَإِنَّا سَبَّبَنَا فَاغْفِرْنَا  
ذُنُوبَنَا وَكَفَرْنَا عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتُوَفِّنَا  
مَعَ الْأَتْرَابِ ٦٩

رَبَّنَا وَأَتَنَا مَا وَعَدْنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلَا  
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةَ إِنَّكَ لَا تَخْلِفُ الْمِيعَادَ  
۝

“हमारे रब ! हम ने एक पुकारने वाले को सुना है जो ईमान के लिये बुलाता है : कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ । सो हम ईमान लाए । हमारे रब ! हमें हमारे गुनाहों से बचा और हमारी बुराइयां हम से दूर कर दे, और हम को नेक लोगों के साथ मत्यु दे ।

“हमारे रब ! हमें वह (सब) प्रदान कर जिसका तू ने अपने रसूलों द्वारा हमें वचन दिया और क़्यामत के दिन हमें रुसवा न करयो । निस्संदेह तू वादे के खिलाफ़ नहीं करता ।” (3:193, 194)

रब्.ब.ना अख्.रिज्.ना मिन हा.जि.हिल्-  
कर्.य.तिज्-जा.लि.मि अह्.लु.हा वज्.  
अल ल.ना मिन ल.दुन्.क वली.यन  
वज्.अल ल.ना मिल-ल.दुन्.क  
न.सी.रा

..... رَبَّنَا أَخْرِجْنَا  
مِنْ هَذِهِ الْفَرْيَادِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا  
وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيَّاً وَاجْعَلْ  
لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ﴿٦﴾

“ऐ हमारे रब ! हमको इस बस्ती से निकाल जिसके रहने वाले ज़ालिम हैं, और हमें अपनी ओर से कोई संरक्षक—मित्र प्रदान कर, और हमें अपनी ओर से कोई सहायक प्रदान कर ।” (4:75)

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا كَهْ وَإِنْ لَمْ  
إِلَّا لَمَ تَغْفِرْنَا لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَا وَنَعْزِيزْنَا مِنَ الْخَيْرِينَ  
रब. ब. ना ज. लम्. ना अन. फु. स. ना व  
इल्-लम तग्. फिर्. ल. ना व तर्. हम्—  
ना ल. न. कू. नन्. न मि. नल्-खा. सि. रीन

“ऐ हमारे रब ! हम ने अपने आप पर अत्याचार किया ; यदि तू ने हमें क्षमा न किया और हम पर दयादृष्टि न की, तो हम निश्चय ही घाटा उठाने वालों में से होंगे ।” (7:23)

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمَنَا  
بِالْعَقْ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَتَحِينَ  
रब. ब. नफ्. तह बै. न. ना व बै. न कौ. मि—  
ना बिल्-हक्. कि व अन्. त खै. रुल्—  
फा. ति. हीन

“ऐ हमारे रब ! हमारे और हमारी क़ौम के बीच सच्चा फैसला कर दे ; और तू ही सर्वोत्तम न्यायकर्ता है ।” (7:89)

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ  
لِلْلِّمَلِ—कौ. मिज्—जा. लि. मी. न व नज्—  
जि. ना बि. रह. म. ति. क मि. नल्—  
कौ. मिल्—का. फि. रीन  
“ऐ हमारे रब ! हमें ज़ालिम लोगों की परीक्षा (का माध्यम) न बना । और अपनी दयालुता से हमें इनकार करने वालों से छुटकारा दिला ।” (10:85, 86)

فَاطِرُ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضَ قَاتَنَتْ وَلَيْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ  
أَنْ. त वली. यी फिद्-दुन्. या वल—  
आ. खि. स. ति त. वफ्. फ. नी मुस्. लि. मन  
वल्-हिक्. नी बिस्-सा. लि. हीन

“ऐ आकाशों और धरती के सृजनहार, तू ही लोक और परलोक में हमरा संरक्षक है । मुझे आज्ञाकारिता की मौत मार और मुझे नेक बन्दों के सोथ मिला ।” (12:101)

رَبِّ أَدْخِلْنِي مُنْ خَلِصْدِيقٍ  
كِنْ وَ أَخْرِجْنِي مُخْرِجْ صِدِيقٍ وَاجْعَلْ تِي  
كِنْ وَ— وَ— اَلَّا لَدُنْكَ سُلْطَنًا تُصِيرَ رَأِي  
سُلْطَانًا نَّرَنْ نَّرَنْ رَأِي

“مेरے رب ! مुझے سत्य کے پ्रवेश—مार्ग द्वारा प्रविष्ट कر اور سत्य کے  
निर्गम—मार्ग द्वारा نिकाल، اور مुझे اپنے यहां से سहायक शक्ति प्रदान  
کر !” (17:80)

رَبَّنَا اِتَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَ هَيْئَيٌ  
رَبِّ بَنَآ نَا آ.تِ.نَا مِنْ لَدُنْكَ  
رَحْمَةً وَ هَيْئَيٌ  
لَكَ مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ①  
رِ.نَا ر.ش.دا

“ऐ हमारे रब ! हमें अपने यहां से दयालुता प्रदान कर, और हमारे काम में  
हमारे लिए भलाई रख दे !” (18:10)

رَبِّ اشْرَحْ لِي صِدِيرِي ②  
رَبِّ اشْرَحْ لِي صِدِيرِي ③  
وَ يَسِّرْ لِي اَمْرِي  
وَ اَحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لَسَانِي ④  
وَ اَحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لَسَانِي ⑤  
يَفْقَهُوا قَوْلِي ⑥

“मेरे रब ! मेरा सीना खोल दे, और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे, और  
मेरी जुबान की गाँठ खोल दे, ताकि वे मेरी बात समझ लें !” (20:25-28)

أَنِّي مَسْئِيَ الصِّرْ وَأَنْتَ أَرْحَمُ  
أَنِّي مَسْئِيَ الصِّرْ وَأَنْتَ أَرْحَمُ  
أَنِّي مَسْئِيَ الصِّرْ وَأَنْتَ أَرْحَمُ  
الرَّحِيمُينَ ⑦

“मुझे तकलीफ पहुंची है! और तू सब दयावानों से अधिक दयावान् है।”  
(21:83)

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَنَكَ رَبِّي  
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَنَكَ رَبِّي  
نَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ⑧

‘तेरे सिवाय कोई परमेश्वर नहीं, तू पाक है! निरसंदेह मैं (अपने ऊपर) जुलम करने वालों में से हूँ’। (21:87)

रब्. बि ला त. जर्. नी फर्. दृव्. व अन्. त  
खै. रल्. वा. रि. सीन

رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرُدَادًا وَأَنْتَ خَيْرٌ  
الْوَرَاثَيْنَ (٦)

“मेरे रब! मुझे अकेला न छोड़ियो ; और तू सब वारिसों से उत्तम है।” (21:89)

रब्. ब. ना आ. मन्. ना फग्. फि॒र्. ल. ना  
वर्. हम्. ना व अन्. त खै॒. रुर्. रा. हि॒. मी॒ न

رَبَّنَا أَمْتَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ  
خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ﴿٦﴾

“ऐ हमारे रब ! हम ईमान लाये अतः हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से बढ़ कर दयावान है।” (23:109)

रब्.ब.ना हब् ल.ना मिन अज्.वा-  
जि.ना व जुर्.री.या.ति.ना कुर्.र.त  
ऐ.यु.निंव.वज्.अल्.ना लिल.मुत्.त-  
की.न झ.मा.मा

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَنْوَاحِنَا وَذُرِّيَّتِنَا  
فِرَّةً أَعْيُنْ وَاجْعَلْنَا لِلنَّقِيْنَ إِمَامًا

“ऐ हमारे रब ! हमें हमारी पत्नियों और हमारी सन्तान द्वारा आँखों की ठंडक प्रदान कर, और हमें धर्मपरायण लोगों का नायक बना ।” (25:74)

रब्.बि अव.जि'अ.नी अन् अश्.कु.र  
नि'अ.म.त.कल-ल.ती अन्.अम्.त  
अ.लै.य व 'अ.ला वा.लि.दै.य व अन्  
आ.म.ल सा.लि.हन् तर.जा.हु व  
अस्.लिह ली फी जुर.री.य.ती इन्.नी  
तुब्.तु इलै.क व इन्.नी मि.नल-  
मुस्.लि.मीन

سَرِّيْتُ أَوْزِيزاً عَنِّيْ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ  
الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيْهِ وَعَلَى وَالِدَيَّ وَأَنْ  
أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضِيهُ وَأَصْلِحُ لِيْ  
فِي ذُرْرَيْتِيْ هُلْ ثُبُتْ إِلَيْكَ وَإِلَيْنِيْ  
مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (١٥)

“मेरे रब! मुझे सामर्थ्य दे कि मैं तेरे उस उपकार का धन्यवाद करूँ जो तू ने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर किया, और कि मैं अच्छे कर्म करूँ जिस से तू राजी हो और मेरे लिए मेरी सन्तान का सुधार कर। निस्संदेह मैं तेरी ओर पलटता हूँ और निश्चय ही मैं समर्पण करने वालों में से हूँ।” (46:15)

رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ لِي مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ<sup>⑯</sup>  
إِنِّي لِمَا يَمْنَعُنِي مِنْ فَحْشَةٍ فَكَافِرٌ

“मेरे रब! जो भलाई तू मेरी ओर भेजे, मैं उसका मोहताज हूँ।” (28:24)

رَبَّنَا وَسَعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا  
رَاهَ مَطَّنَ وَأَمْلَأَ مَنْ فَعَلَ فِيمَا لَمْ  
لَمْ يَرَى نَفْعًا وَأَتَبْعَثُ عَوْنَاحَ  
وَقَهْمَرَ عَذَابَ الْجَحِيمِ<sup>⑦</sup>

“ऐ हमारे रब! तेरी दयालुता और ज्ञान हर चीज़ को घेरे हुए है, अतः उन्हें  
क्षमा कर जो तौबा करते हैं और तेरे रस्ते पर चलते हैं और उन्हें नरक की  
यातना से बचा।” (40:7)

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّتِ عَدْنَ الَّتِي  
أَدْنَى—نِيل—ل.ती व.अद्.त.हुम जन्ना.ति  
وَعَدْنَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ أَبْيَاهُمْ  
مَنْ س.ल.ह मिन् आ.बा.अि.हिम व  
وَأَنْدَرَ جَهَنَّمَ وَذُرْرِيَّهُمْ إِنَّكَ أَنْتَ  
إِنْ.न.क अन्.तल—अ.जी.जुल—हकीम<sup>⑧</sup>

“ऐ हमारे रब! और उन्हें शाश्वतता के बागों में दाखिल कर, जिनका तू ने  
उनसे वादा किया है— और उनके बापदादाओं और उनकी पत्नियों और  
उनकी सन्तान में से जो नेक हों। निस्संदेह तू प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।”  
(40:8)

أَنِّي مَعْلُوبٌ فَانْتَصِرُ<sup>⑨</sup>  
इन्.नी मग्.लू.बुन् फन्.त.सिर

“मैं विवश हो चुका हूँ तू मेरी मदद कर।” (54:10)

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا  
نِيل.नल—ल.जी.न स.ब.कू.ना बिल—  
بِالْأَيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غُلَامًا  
ई.मा.नि व ला तज़.अल् फी कु.लू.बि.ना  
لِلَّذِينَ أَمْنَوْا رَبَّنَا إِنَّكَ رَعُوفٌ رَّحِيمٌ<sup>⑩</sup>  
रब्.ब.ना इन्.न.क र.अू.फुर्—र.हीम

“ऐ हमारे रब! हमें क्षमादान दे, और हमारे (उन) भाइयों को भी जो ईमान में हम से आगे रहे, और हमारे दिलों में उनके लिये जो ईमान लाये ईर्ष्या पैदा होने न दे, ऐ हमारे रब! तू बड़ा करुणाशील, दयावान् है।” (59:10)

रَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكّلْنَا .....  
 رَبَّنَا أَنْبَنَا وَإِلَيْكَ الْمُصِيرُ ④  
 رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا  
 وَأَغْفِرْنَا سَرَبَتْ إِلَيْكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ  
 الْحَكِيمُ ⑤

रब.ब.ना अ.लै.क त.वक्.कल.ना व  
 इ.लै.क अ.नब्.ना व इ.लै.कल—  
 म.सी.र रब्.ब.ना ला तज्.अल.ना  
 फित्.न.तन् लिल्-ल.जी.न क.फ.रु  
 वग्-फिर्.ल.ना रब्.ब.ना इन्.न.क  
 अन्.तल्-अ.जी.जुल्-ह.कीम

“ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया, और तेरी ओर रुजू किया, और तेरी ही ओर अन्तिम वापसी है। ऐ हमारे रब! हमें उन लोगों (के हाथ) से दुख न पहुंचा जो काफिर हैं, और ऐ हमारे रब! हमारी रक्षा कर। तू ही प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है।” (60:4, 5)

### कुछ प्रमुख दुआएं हदीस से

#### सोते समय की दुआ

अल.ला.हुम्.म अस्.लम्.तु नफ्.सी  
 इ.लै.क व वज्.जह.तु वज्.ही इ.लै.क  
 व फव्.वज्.तु अम्.री इ.लै.क वल—  
 जा.तु जह.री इ.लै.क रग्.ब.तन् व  
 रह्.ब.तन् इ.लै.क ला मल्.जा व ला  
 मन्.जा मिन्.क इल्.ला इ.लै.क  
 आ.मन्.तु बि.कि.ता.बि.कल—ल.जी  
 अन्.जल्.त व न.बी.यी.कल—ल.जी  
 अर्.सल्.त

اللَّهُمَّ اسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ وَ  
 وَجْهِتُ وَجْهِي إِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ أَرْدِيَ  
 إِلَيْكَ وَالْجَاهِتُ ظَهَرْتُ إِلَيْكَ رَغْبَةً  
 وَرَهْبَةً إِلَيْكَ لَامْجَاجًا وَلَامْتَجَاجًا  
 مِنْكَ إِلَى إِلَيْكَ أَمْتَثَ بِكَتَابِكَ الَّذِي  
 أَنْزَلْتَ وَبِيَقِنِكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ

“ऐ अल्लाह! मैं अपनी जान को तेरे हवाले करता हूँ, और अपनी तवज्जह को तेरी ओर फेरता हूँ, और अपने काम को तेरे हवाले करता हूँ, और तुझ को अपनी पुश्तपनाह (सहायक) बनाता हूँ तेरे प्रेम और तेरे भय के कारण, शरण और मुक्ति का स्थल सिर्फ तेरे पास है। ऐ अल्लाह! जिस किताब को तू ने उतारा है उस पर और जिस नवी को तू ने भेजा है उस पर ईमान लाता हूँ।”

### सो कर जागने की दुआ

अल.हम्.दु लिल-ला.हिल-ल.जी  
अह.या.ना वअ.द मा अ.मा.त.ना व  
इ.लै.हिन्-नु.शूर. ला इ.ला.ह  
इल.लल-ला.हु वह.द.हू ला.श.री.क  
ल.हू ल.हुल-मुल.कु व ल.हुल-  
हम्.दु व हु.व अ.ला कुल.लि शै-  
अिन क.दी.र

“उस अल्लाह की स्तुति हो! जिसने हम को मरने के बाद ज़िन्दा किया, और उसी की ओर मर कर जी उठना है। अल्लाह के सिवाय कोई ईश्वर नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझेदार नहीं, संपूर्ण राज्य उसी का है और स्तुति भी उसी के लिए है, और उसे हर चीज़ पर सामर्थ्य प्राप्त है।

### घर से बाहर जाते समय की दुआ

बिस.मिल-ला.हि त.वक्.कल.तु  
अ.लल-ला.हि अल.ला.हुम्.म  
इन.ना न.आ.जु.बि.क मिन अन-  
न.जिल.ल अव् न.दिल.ल अव्  
नज्.लि.म अव् नुज्.ल.म अव्  
नज्.ह.ल अव् युज्.ह.ल अ.लै.ना

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَخْيَانَابَعْدَ مَا  
أَمَّاَتَنَا وَإِلَيْهِ التَّشْوِسُ هَلَا إِلَهَ إِلَّا  
اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ كُلُّ الْمُلْكُ  
وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَلَّهُمَّ  
إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ تُنْزِلَ أَوْ تُنْصِلَ  
أَوْ تُنْظِلَ مَا أَوْ نَظَلْنَا أَوْ نَجْهَلَ أَوْ  
يُجْهَلَ عَلَيْنَا

“अल्लाह के नाम से, अल्लाह पर ही मैं भरोसा करता हूँ। ऐ अल्लाह! हम तेरी शरण मांगते हैं कि हम ठोकर खा जाएं या गुमराह हो जाएं या दूसरों के प्रति अन्याय करें या यह कि हम पर अन्याय किया जाए, या यह कि हम दूसरों के प्रति जहालत से पेश आयें या दूसरे हमारे प्रति जहालत से पेश आएं।”

### घर में दाखिल होते समय की दुआ

अल्.ला.हुम्.म इन्.नी अस्.अ.लु.क  
खै.रल्-मव्.ल.जि व खै.रल्.मख्-  
र.जि बिस्.मिल्-ला.हि व लज्.ना  
ब अ.लल्-ला.हि रब्.ब.ना त.वक्-  
कल्.ना

اللَّهُمَّ إِنَّنَا نَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمُوْلَجِينَ  
خَيْرَ الْمَخْرَجِينَ سُبْرِ اللَّهِ وَلَعْنًا وَ  
عَلَى اللَّوْرَبَنَاتِ نَوْكَلَنَا

“ऐ अल्लाह! मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरा प्रवेश सुखपूर्वक हो और मेरा निकलना सुखपूर्वक हो; हम अल्लाह के नाम से दाखिल होते हैं, और हम अल्लाह, हमारे रब, पर भरोसा करते हैं।”

### खाने या पीने से पहले की दुआ

बिस्.मिल्-ला.हि व अ.ला ब.र.क-  
तिल्-लाह

بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى بَرَكَةِ اللَّهِ

“अल्लाह के नाम और अल्लाह की बरकतों के साथ।”

### खाना खाने के बाद की दुआएं

अल्.हम्.दु लिल्-ला.हिल्-ल.जि  
हु.व अश्.ब.अ.ना व अर्.वा.ना व  
अन्.अ.म अ.लै.ना व अफ्.ज.ल

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هُوَ أَشْبَعَنَا وَأَنْعَانَا  
وَأَنْعَمَ عَلَيْنَا مَا أَفْضَلَ

“अल्लाह की स्तुति हो! जिस ने हमारी भूख मिटाई और हमारी प्यास बुझाई,  
और हम पर अपने वरदान और अनुग्रह वर्षित किए।”

अल्.हस्.दु लिल्-ला.हिल्-ल.ज़ी  
अत्.अ.म.ना व स.का.ना व ज.अल्-  
ना मि.नल्-मुस्.लि.मीन

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا  
وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ

“अल्लाह की स्तुति हो! जिस ने हमें खिलया और पिलाया, और हमें  
मुसलमानों (यानि समर्पण करने वालों) में से बनाया।”

शौचालय जाते समय की दुआ

अल्.ला.हुस्.म इन्.नी अ.‘बू.जु.बि.क  
मिल्-खुब्.सि वल्-ख.बा.अि.स

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ  
وَالْخَيَّابَاتِ

“ऐ अल्लाह! मैं तेरी शरण चाहता हूँ समस्त अपवित्रताओं और समस्त  
अपवित्र (गुणों एवं नीतियों) से।”

शौचायल से बाहर आते समय की दुआ

अल्.हस्.दु लिल्-ला.हिल्-ल.ज़ी  
अज्.हब् अन्.निल्-अ.जा.व  
आ.फा.नी

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنِّي  
الْأَذَى وَعَافَانِي

“अल्लाह की स्तुति हो! जिस ने मुझ से अपवित्रता दूर की और मुझे सुरक्षा  
प्रदान की।”

शहर में दाखिल होते समय की दुआ

अल्.ला.हुस्.म इन्.ना नस्.अ.लु.क  
खै.र हा.जि.हिल्-कर.य.ति व  
खै.र अह.लि.हा व न.अू.जु.बि.क  
मिन शर्.रि.हा व मिन शर्.रि  
अह.लि.हा व शर्.रि मा फी.हा

اللَّهُمَّ إِنِّي أَنْشَأْتُكَ خَيْرَهُ مِنْ قَرْيَةِ  
وَخَيْرًا مِلِّهَا وَنَعُودُكَ مِنْ شَرِّهَا  
وَشَرِّأَهْلِهَا وَشَرِّمَا فِيهَا

अल.ला.हुम्.म हब.बिब.ना इ.ला  
अह.लि.हा व हब.बिब सा.लि.ही  
अह.लि.हा इ.लै.ना

اللَّهُمَّ حِبِّنَا إِلَّا أَهْلِهَا وَحْتَبِّ  
صَالِحٍ أَهْلِهَا إِلَيْنَا

“ऐ अल्लाह! हम तुझ से इस शहर की और इसके वासियों की भलाई मांगते हैं, और हम इस की बुराई और इसके वासियों की शरारत के प्रति तेरी शरण मांगते हैं, और उस बराई के प्रति जो इस में है। ऐ अल्लाह! इसके वासियों में हमारे प्रति प्रेम उत्पन्न कर दे, और इसके नेक लोगों के प्रति हमारे भीतर प्रेम रख दे।”

### जब बीमार की ख़ेरियत पूछे

अज़्.हि.विल—बा.स रब.बन—ना.सि  
वश.फि अन.तश—शा.फी ला  
शि.फा.अ इल.ला शि.फा.अ.क  
शि.फा.अन ला यु.गा.दि.रु स.क.मा

أَذْهِبْ أُبَاسَ بَنْتَ التَّابِسِ  
وَأَشْفِعْ أَنْتَ الشَّافِ لَأَشْفَعَأَهُ  
لَأَشْفَعَأَهُ لَأَشْفَعَأَهُ لَأَبْغَادَرْ سَقَمًا

“ऐ संपूर्ण मानवजाति के पालनहार—स्थाटा! बीमारी को दूर और सेहत को कायम कर दे। तू ही रोगहरता है, रोग—मुक्ति वही है जो तेरी प्रदान की हुई रोग—मुक्ति हो; बीमारी ऐसे दूर कर कि कोई रोग बाकी न रहे।”

### कबरिस्तान जाते समय की दुआ

अस.स.लामु अ.लै.कुम अह.लद—  
दि.या.रि मि.नल—मुअ.मि.नी.न  
वल—मुस.लि.मी.न व इन.ना इन  
शा.अल—ला.हु वि.कुम ल.ला.हि—  
कू.न नस.अ.लुल—ला.ह ल.ना व  
ल.कु.मुल—आ.फि.यह

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْرِ مِنْ  
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَإِنَّا إِنَّ  
شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَلَّا يَنْقُوتُ  
نَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ

अस्-स.ला.मु अ.लै.कुम अह.लल—  
कु.बू.रि यग्.फि.रुल्-ला.हु ल.ना व  
ल.कुम अन्.तुम स.लफ्.ना व  
नह.नु बिल्.अ.स.रि

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقِبْوَرِ  
يَعْفُرَ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ سَلَفُنَا  
وَمَخْفُتُ بِالْأَثْرِ

"ऐ इस स्थल के वासियो! तुम पर सलाम हो—ईमान वालों और मुसलमानों में से; अल्लाह ने चाहा तो हम भी तुम से मिलने वाले हैं। हम अल्लाह से हमारा संरक्षण और तुम्हारा संरक्षण चाहते हैं। तुम पर शांति वर्षित हो, ऐ कबरों में रहने वालो! अल्लाह हमें और तुम्हें क्षमा करे। तुम पहले जा चुके हो और हम तुम्हारे पीछे आ रहे हैं।"

### सफर पर जाते समय की दुआ

अल्-ला.हु.म् म इन्.ना नस्.अ.लु.क  
फी स.फ.रि.ना हा.जल्-बिर.र  
वत्-तक्.वा व मि.नल्-अ.म.लि मा  
तर.जा

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا  
إِلَيْتَ وَالْتَّقَوْتَ وَمِنَ الْعَمَلِ مَا  
تَرْضَى

"ऐ अल्लाह! हम तुझ से हमारे इस सफर में नेकी और कर्तव्यनिष्ठा चाहते हैं, और ऐसे कर्म जो तुझे पसंद हों।"

अल्-ला.हु.म हव्.विन् अ.लै.ना  
स.फ.र.ना हा.जा वत्.वि.ल.ना  
बुअ.द.हू

اللَّهُمَّ هَوْنًا عَلَيْنَا سَفَرُنَا هَذَا  
وَاطْبُولْنَا بَعْدَهُ

अल्-ला.हु.म अन्.तस्-सा.हि.बु  
फिस्.-स.फ.रि वल्-ख.ली.फ.तु  
फिल्-अह.लि

اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ  
وَالْمَلِيقَةُ فِي الْأَهْلِ

"ऐ अल्लाह! हमारा यह सफर हमारे लिए आसान कर दे और इसकी दूरी को हमारे लिए समेट दे। ऐ अल्लाह! तू ही सफर में मित्र है और (पीछे) घरवालों का संरक्षक है।"

## सवारी या गाड़ी चलाते समय की दुआ

सु.हा.नल—ल.जी सख्.ख.र ल.ना  
हा.जा व मा कुन्.ना ल.हू मुक्.रि—  
नी.न व इन्.ना इ.ला रब्.बि.ना  
ल.मुन्.क.लि.बून

سَبَّحَاهُ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا  
وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِبِينَ وَارَأَيْتَ إِلَى  
رَبِّنَا الْمُنْقَلِبِينَ

“पवित्रतास्वरूप है वह जिस ने इसको हमारे वश में किया और हम ऐसा न कर सकते थे; और निस्संदेह हम अपने रब की ओर लौट कर जाने वाले हैं।”

## कश्ती पर सवार होते समय की दुआ

बिस्.मिल—ला.हि मज्.रीय.हा व  
मुर्.सा.हा इन्.न रब्.बी ल—  
गु.फू.रु—र.हीम

بِسْمِ اللَّهِ تَبَّعِيرِهَا وَمُرْسَلِهَا  
إِنَّ رَبِّكَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ

“इस का चलना और इसका ठहरना अल्लाह के नाम से है; निस्संदेह मेरा रब अत्यन्त क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।”

## तकलीफ के समय की दुआ

अल्—ला.हुम्.मस्—तुर्.अव्.रा.ति.ना  
व आ.मिन् रव्.‘आ.ति.ना

اللَّهُمَّ اسْتَرْعَوْرَا تِنَا وَأَمِنْ  
رُؤَاعِتِنَا

“ऐ अल्लाह! हमारी लज्जा को सुरक्षित रख और हम से हमारा भय दूर कर दे।”

अल्—ला.हुम्.म रह.म.त.क अर्.जू  
फ.ला त.किल्.नी इ.ला नफ्.सी  
तर्.फ.त ऐ.निन्

اللَّهُمَّ رَحْمَةَكَ أَرْجُوْفَلَانْكُلِفَتْ  
النَّفْسِ طَوْفَةَ غَيْرِ

“ऐ अल्लाह! मुझे तेरी दयालुता की उम्मीद है, अतः पलक झापकने भर के लिए भी मुझे मेरे जी केसाथ अकेला न छोड़ियो।”

या है. या कै. यू. मु बि. रह. म. ति. क  
अस्. तगी. सु

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
يَا سَكِينَةُ يَوْمٍ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغْفِرُكَ

"ऐ सदा जीवन्त, स्वयं स्थिर सृष्टि को स्थिरता प्रदान करने वाले प्रभु! मैं तेरी दयालुता के लिए गुहार लगाता हूँ।"

### दर्पण देखते समय की दुआ

अल्-ला. हुम्. म क. मा हस्. सन्. त  
खुल्. की फ. अह. सिन खुल्. की

اللَّهُمَّ كَمَا حَسَنْتَ خَلْقِي فَأَسْخِنْ  
خَلْقِي

"ऐ अल्लाह! जिस तरह तू ने मेरी शकल को सुन्दरता प्रदान की, उसी तरह मेरे आचार-विचार को सुन्दर बना।"

### पहला फल खाते समय की दुआ

अल्-ला. हुम्. म बा. रिक् ल. ना फी  
स. म. रि. ना व बा. रिक् ल. ना फी  
म. दी. न. ति. ना अल्-ला. हुम्. म क. मा  
अ. रै. त. ना अव्. व. ल. हू फ. अ. रिना  
आ. खि. र. हू

اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَمْرَنْ وَبَارِكْ  
لَنَا فِي مَدِينَتِنَا اللَّهُمَّ كَمَا رَبَّنَا  
أَقْلَهْ فَارِكْ أَخْرَهْ

"ऐ अल्लाह! हमें हमारे फलों में बरकत दे, और हमें हमारे शहर में बरकत दे; ऐ अल्लाह! जिस तरह तू ने हमें इसका पहला फल चखाया उसी तरह हमें इसका आखिरी फल चखा।"

### स्नान या वजू के बाद की दुआ

अल्. ला. हुम्. मज्-अल्. नी मि. नत-  
तव्. वाबी. न वज्. अल्. नी मि. नल-  
मु. त. तह. हि रीन

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ الشَّوَّابِينَ  
وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُنْتَطَهِرِينَ

"ऐ अल्लाह! मुझे उन में से बना जो बार-बार तेरी ओर पलटते हैं, और मुझे उन में से बना जो अपना शोधन करते हैं।"

जब दुश्मन का सामना करे

अल-ला.हुम्.म इन्.ना नज्.अ.लु.क  
फी नुहू.रि.हिम व न.ஆ.জু.বি.ক मिन  
শ.র.রि.हिम

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي حُكْمِهِمْ وَ  
نَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ دِرْهَمٍ

“ऐ अल्लाह! हम इन के विरुद्ध तेरी सहायता की विनति करते हैं और इन की शरारतों के प्रति तेरी शरण माँगते हैं।”

अल-ला.हुम्.म बि.क अ.हू.लु व  
बि.क अ.सू.लु व बि.क उ.का.ति.लु

اللَّهُمَّ بِكَ أَحْوَلُ وَبِكَ أَصْبُلُ  
وَبِكَ أَتَاتِلُ

“ऐ अल्लाह! मैं तेरी सहायता द्वारा आगे बढ़ता हूँ और तेरी सहायता द्वारा आक्रमण करता हूँ और तेरी सहायता द्वारा युद्ध लड़ता हूँ।”

इस्.ति.खा.रह

यानि सही मार्ग सुझाये जाने की प्रार्थना

अल-ला.हुम्.म इन्.नी अस्.त.खी-  
रु.क बि.अिल्.मि.क व अस्.तक्.दि-  
रु.क बि.कुद्.र.ति.क व अस्.अ-  
लु.क मिन फ़ज्.लि.कल्-अ.जी.मि  
फ.इन्.ن.क तक्.दि.रु व ला  
अक्.दि.रु व तअ.ल.मु व ला  
‘आ.ल.मु व अन्.त ‘अल.ला.मुल-  
गु.यूब. अल-ला.हुम्.म इन कुन्.त  
तअ.ल.मु अन्.न हा.जल्-अम्.र  
खै.रुल्-ली फी दी.नी व म.आ.शी  
व आ.कि.ब.ति अम्.री फ़क्.दि.ر.हु  
ली व यस्.सि.र.हु ली सुम्.म

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخْرِجُكَ بِعِلْمِكَ وَ  
أَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَةِكَ وَأَسْأَلُكَ  
مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ  
وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ  
عَلَامُ الْغَيْبِ اللَّهُمَّ إِنِّي كُنْتَ تَعْلَمُ  
أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِّي فِي دِينِي  
وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةٌ أَمْرِي فَأَتَدْبِرُ  
كَمْ وَلَيْسَ رُبِّي بِثُمَّ بِارْكُ

वा.रिक्. ली फी.हि व इन कुनू.त  
त'अ.ल.मु अनू.न हा.जल—अम्.र  
शर्.रुल—ली फी दी.नी व  
म.'आ.शी व आ.कि.ब.ति अम्.री  
फस्.रिफ्.हु 'अनू.नी वस्.रिफ्.नी  
'अनू.हु वक्.दुर्. लि.यल—खौ.र  
है.सु का.न सुम्.म अर्.जि.नी बि.ही

لِكَفِيلٍ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ  
هَذَا الْأَمْرُ شَرُّكٌ فِي دِينِي  
وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَتِيْ أَمْرٌ فَاصْرُونَكَ  
عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْكَ وَافْدُرْكَ  
الْخَيْرَ حِلْيَتْ كَانَ تَعْلَمَ أَضْرِبْنِيْ بِهِ

"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरे ज्ञान द्वारा भलाई की प्रार्थना करता हूँ और तुझ से तेरी शक्ति द्वारा सामर्थ्य की प्रार्थना करता हूँ और तुझ से तेरे महा अनुग्रह की याचना करता हूँ क्योंकि सामर्थ्य तेरे पास है और मेरे पास सामर्थ्य नहीं, और तू जानने वाला है और मेरे पास ज्ञान नहीं और तू समस्त रहस्यों का महा ज्ञाता है। ऐ अल्लाह! यदि तू जानता है कि यह काम मेरे लिए अछा है—मेरे धर्म के लिए, मेरी रोज़ीरोटी के लिए और अन्त के लिए, तो मुझे इसकी शक्ति देदे, और इसको मेरे लिए आसान कर दे और मेरे लिए इस में बरकत रख दे; और यदि तू जानता है कि इस काम में मेरे लिए अहित है—मेरे धर्म के लिए, मेरी रोज़ीरोटी के लिए और अन्त के लिए, तो इसको मुझ से दूर कर दे, और मुझे भलाई की शक्ति दे जहां कहीं हो, और फिर मुझे इसके द्वारा संतुष्टि प्रदान कर।"

### छोटे छोटे वाक्य

जिनको

मुसलमान अपने दैनिक जीवन में  
इस्तेमाल करता है

1. बिस्.मिल्.लाह

بِسْمِ اللَّهِ

"अल्लाह के नाम से।"

मुसलमान का हर काम इन्ही शब्दों से शुरू होता है। उद्देश्य केवल यह समझाना है कि इन्सान को हर मामले में परमात्मा की सहायता माँगनी

चाहिए। परमात्मा का ध्यान स्वतः उसे बुरे काम से बाज़ रखेगा। यह वाक्यांश असल में इस आयत का संक्षिप्त रूप है :

बिस. मिल-ला. हिर-रह. मा. निर-  
र. हीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“अल्लाह के (मंगलमय) नाम से, जो अपार दयालु, सतत कृपालु है।”

इसी पवित्र आयत से कुर्�आन शरीफ का शुभारंभ होता है।

## 2. अल-हमदु लिल-लाह

الْحَمْدُ لِلَّهِ

“सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है।”

जब भी कोई भलाई पहुंचती है तो यह वाक्य अल्लाह प्रति धन्यवाद स्वरूप बोला जाता है। यहांतक कि जब किसी को छींक आजाए तो उसे इन्हीं शब्दों का उचारण करना होता है। कुर्�आन शरीफ की पहली सूरत का शुभारंभ भी इसी पावन वाक्य से होता है।

## 3. अल-ला.हु अक्.बर

اللَّهُ أَكْبَرُ

“अल्लाह सब से बड़ा है।”

इस वाक्य को तकबीर कहते हैं। यह वाक्य हर उस अवसर पर दोहराया जाता है जहां इन्सान को अपनी हीनता दिखानी हो या प्रभु की महानता के मुकाबले संपूर्ण सृष्टि-वर्गों की तुच्छता ज़ाहिर करना हो। इसी वाक्य को मुसलमान युद्धघोष के रूप में भी इस्तेमाल करता है, यह जताने के लिए कि दुश्मन की बड़ी से बड़ी सेना उसे भयभीत नहीं कर सकती।

## 4. सुब.हा.नल-लाह

سُبْحَانَ اللَّهِ

“अल्लाह की महिमा हो!” या

“अल्लाह समस्त त्रुटियों एवं अपूर्णताओं से पाक है।”

यह वाक्य उस वक्त बोलते हैं जब बोलने वाले को यह बतना अभीष्ट हो कि वह त्रुटियों या ग़लतियों से खाली नहीं। इस वाक्य को उस समय भी बोलते हैं जब किसी को ग़लती करते देखते हैं।

5. अस्.तग्.फि.रुल्.लाह

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

“मैं अल्लाह का संरक्षण चाहता हूँ।”

इस प्रार्थना को बार बार दोहराना चाहिए। इस वाक्य को उस समय भी दोहराते हैं जब इन्सान का सामना किसी ऐसी बात से हो जिस से वह बचना चाहता है। इस वाक्य को इस्.तिग्.फार कहते हैं, यानि अल्लाह से भावी गुनाह के प्रति संरक्षण की और गत पापों के प्रति क्षमा की याचना। जितना ज्यादा इस प्रार्थना का दोहराव होगा उतना ही पाप से संरक्षण मिलेगा। इस्.तिग्.फार का पूर्ण रूप यह है :

अस्.तग्.फि.रुल्.लाह रब्.बी मिन्  
कुल्.लि ज़न्.बिंव्-व अ.तू.बु  
इ.लै.हि

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ مِنْ كُلِّ  
ذَنْبٍ وَّأَتُوْبُ إِلَيْهِ

“मैं प्रत्येक दोष या कोताही के प्रति अल्लाह का संरक्षण चाहता हूँ और मैं उसी की ओर पलटता हूँ।”

6. ला हव्.ल व ला कू.व.त इल्.ला  
विल्-लाह

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

“कोई सामर्थ्य कोई शक्ति नहीं किन्तु अल्लाह में।”

इन शब्दों का आशय यह जताना है कि इन्सान मूलतः कमज़ोर है उस में बुराई से बचने की या भलाई का अनुसरण करने की शक्ति नहीं, इन्सान को यह शक्ति प्रभु द्वारा ही प्राप्त होती है। इन मंगलमय शब्दों में प्रभु-भरोसे की अनमोल सीख भी है।

7. इन शा.अल्-लाह

إِنْ شَاءَ اللَّهُ

“अगर अल्लाह की इच्छा हो तो!”

कोई काम हाथ में लेते समय इन शब्दों का उचारण किया जाता है, यह जताने के लिए कि इन्सान के ठान लेने के बाद भी यह कार्य सम्पन्न तभी होगा जब अल्लाह की ऐसी इच्छा हो।

8. मा. शा. अल-लाह

مَاسْتَأْلِهُ اللَّهُ

“अल्लाह ने ऐसा ही चाहा!”

जब किसी व्यक्ति या वस्तु की प्रशंसा अभीष्ट हो तो यह वाक्य बोलते हैं, यह जताने के लिए कि भलाई सब की सब प्रभु के यहां से ही आती है।

9. हस्. बि. यल-लाह

حَسْبِيَ اللَّهُ

हस्. बु. नल-लाह

حَسْبَنَا اللَّهُ

“मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है!”

“हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है!”

इन शब्दों का उद्देश्य यह बताना है कि अल्लाह ही इन्सान को हर तरह की गलती और मुसीबत का भागी बनने से बचा सकता है।

10. इन्. ना लिल-लाहि व इन्. ना

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِحُونَ

इलै.हि रा.जि. औन

“निस्संदेह हम अल्लाह के हैं और निश्चय ही उसकी ओर लौट कर जाने वाले हैं।”

ये शब्द उस समय बोले जाते हैं जब इन्सान को किसी के मरने की या किसी प्रकार के नुक़सान की खबर मिले। इन शब्दों का उद्देश्य यह जताना है कि जान व माल की हानि भी परमात्मा के नियमानुसार है, और यह कि इन्सान को सांसारिक सुखों में ज़रूरत से ज़्यादा लीन नहीं होना चाहिए, और किसी मुसीबत के आने पर अधिक दुखी भी नहीं होना चाहिए।

11. अस्-स. ला. मु अ.लै. कुम

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ

व अ.लै. कु.मुस्-स. ला. म

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ

“तुम पर (अल्लाह की) शांति वर्षित हो!”

“और तुम पर भी (अल्लाह की) शांति वर्षित हो!”

जब मुसलमान अपने किसी भाई से मिलता है तो पहले वाक्यांश द्वारा सलाम करता है, दूसरा वाक्यांश इसी सलाम का जवाब है। इस्लामी सलाम का पूर्ण रूप यह है :

अस्-स.ला.मु अ.लै.कुम व  
रह.म.तुल-ला.हि व ब.र.का.तु.हू  
व अ.लै.कु.मुस्-स.ला.मु व  
रह.म.तुल-ला.हि व ब.र.का.तु.हू

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

“तुम पर (अल्लाह की) शांति वर्षित हो, और उसकी दयालुता और उसकी बरकतें!”  
“और तुम पर भी (अल्लाह की) शांति वर्षित हो, और उसकी दयालुता और उसकी बरकतें!”

جزاك الله

جزاك الله خيراً

12. ज.ज़ा.कल-लाह

ज.ज़ा.कल-लाहु ख़ै.रा

“अल्लाह तुम्हें इसका बदला दे!”

‘अल्लाह तुम्हें इसका अच्छा बदला दे!’

जब मुसलमान किसी से कोई तोहफा या भलाई पाता है तो धन्यवाद स्वरूप ये शब्द कहता है। दोनों ही सूरतों में कोई एक वाक्य बोल सकते हैं।

مازلك الله

13. बा.र.कल-ला.ह

“अल्लाह (तुम्हें) बरकत दे!”

किसी में कोई अच्छाई या भलाई देखे तो ये शब्द कहे, यह जताने के लिए कि अल्लाह उसकी भलाई में अभिवृद्धि करे और भलाई का यह सिलसिला कभी समाप्त न हो।

**14. हस्.बु.कल्-लाह**

حَسْبُكَ اللَّهُ

“अल्लाह तेरे लिए काफी हो!”

ये शब्द उस वक्त बोले जाते हैं जब किसी मुसलमान भाई को गिरते या गलती में पड़ते देखे।

**15. यर.ह.मु.कल्-लाह**

يَرْحَمُكَ اللَّهُ

“अल्लाह तुझ पर दया करे।”

ये शब्द उस वक्त बोले जाते हैं जब किसी मुसलमान भाई को मुसीबत में देखे।

“अल्लाह तुम्हारे द्वारा देखा जाना है कि आजकल की इन सभी व्यापक विषयों का बारी चाह वा तात्परा क्या है?”

“अल्लाह तुम्हारे द्वारा देखा जाना है कि आजकल की इन सभी व्यापक

विषयों का बारी चाह वा तात्परा क्या है?”

“अल्लाह तुम्हारे द्वारा देखा जाना है कि आजकल की इन सभी व्यापक

विषयों का बारी चाह वा तात्परा क्या है?”

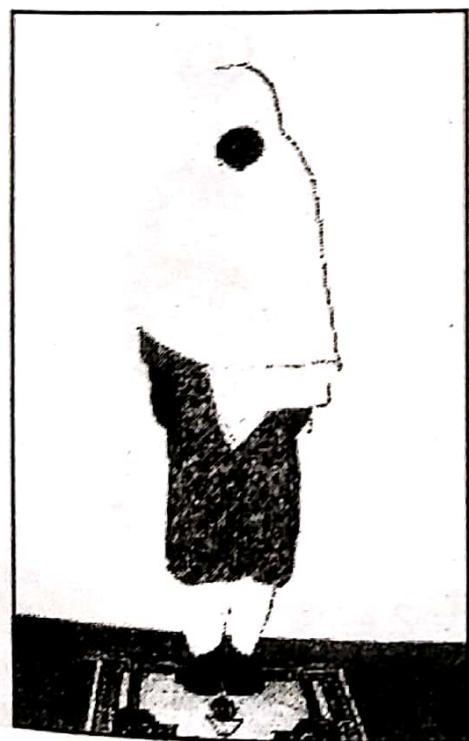
“अल्लाह तुम्हारे द्वारा देखा जाना है कि आजकल की इन सभी व्यापक

विषयों का बारी चाह वा तात्परा क्या है?”

“अल्लाह तुम्हारे द्वारा देखा जाना है कि आजकल की इन सभी व्यापक

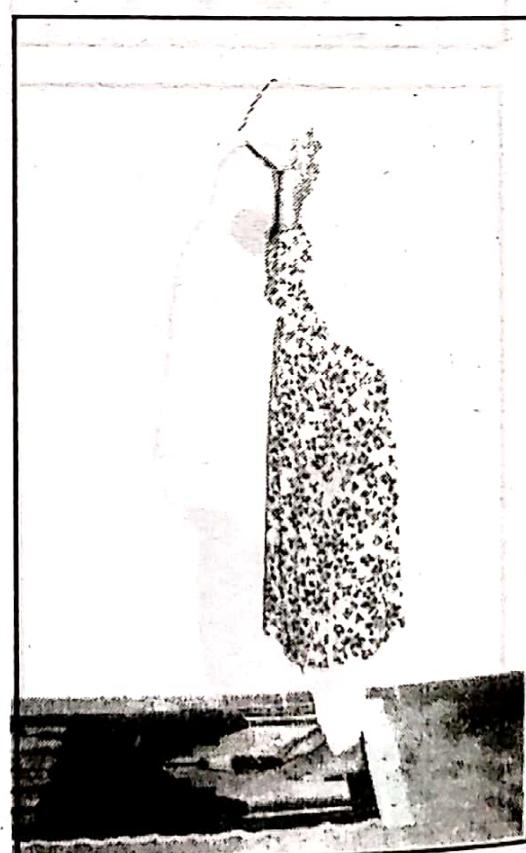
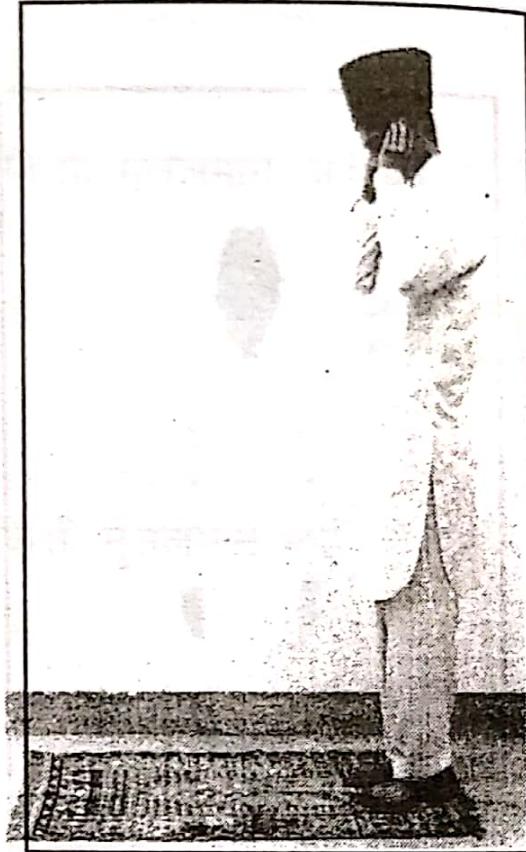
विषयों का बारी चाह वा तात्परा क्या है?”

छाया चित्र - क



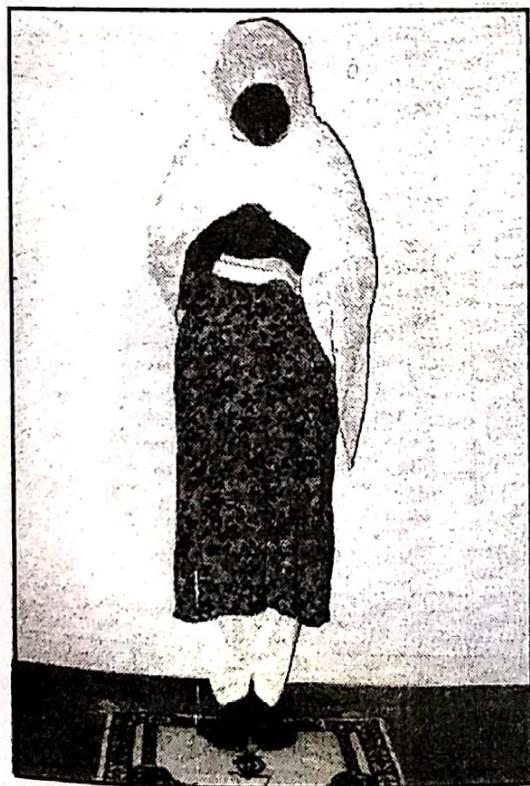
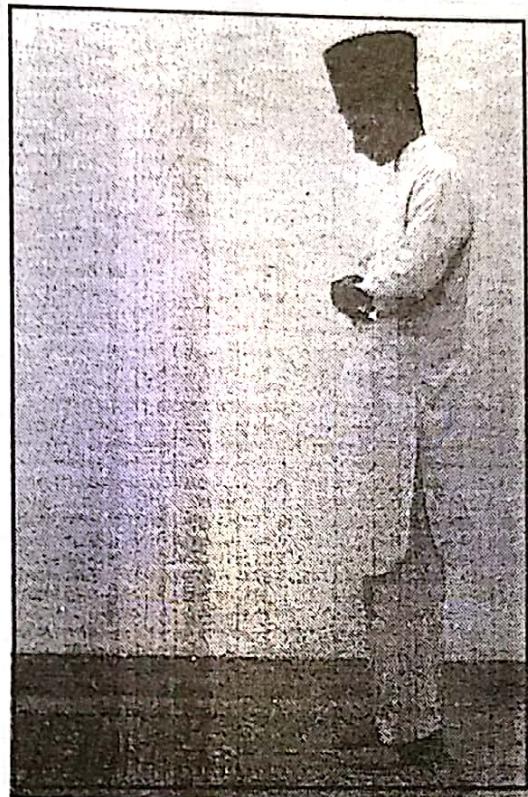
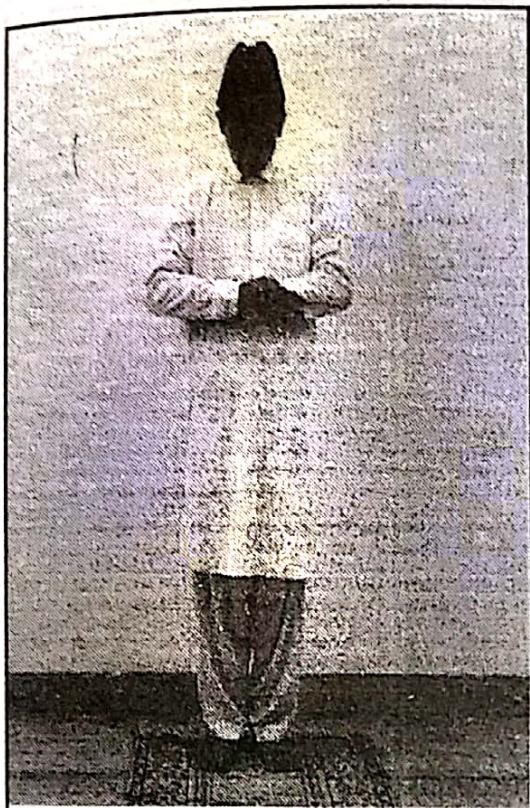
'इकामह' तथा 'रुकूअ' से उठने के बाद की मुद्रा

छाया चित्र - ख



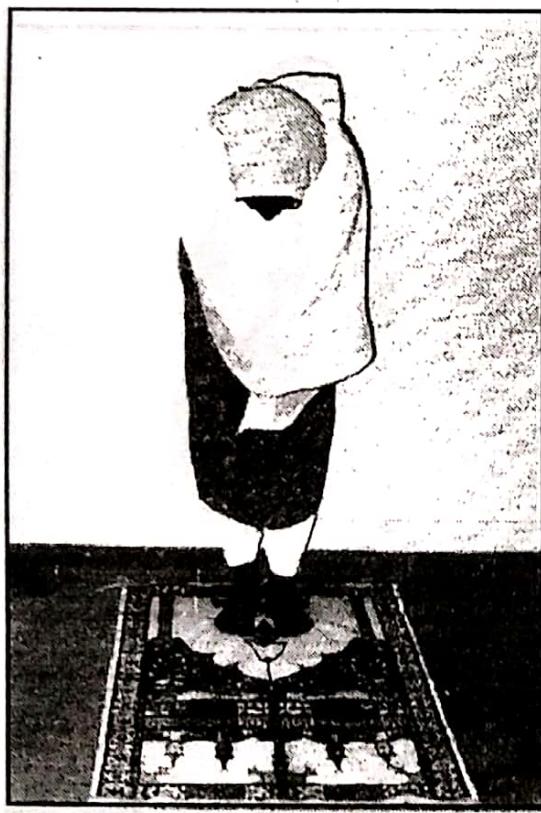
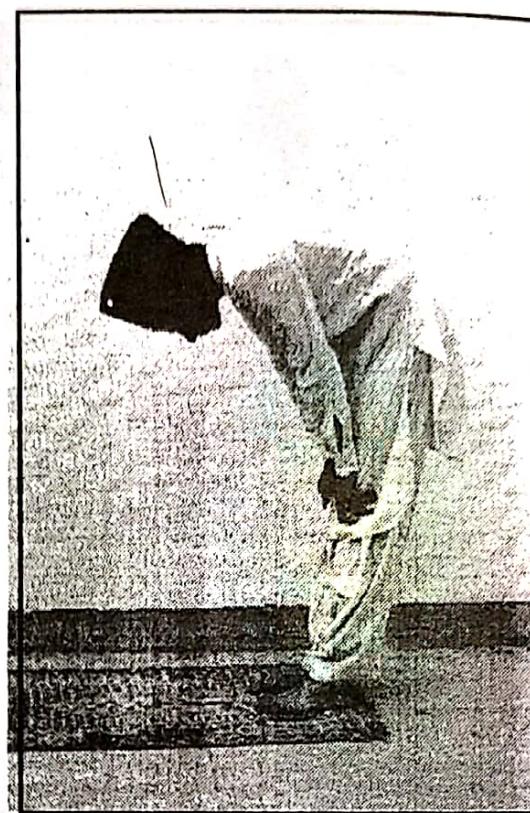
तकबीर—ए—तहरीमा

## छाया चित्र - ग



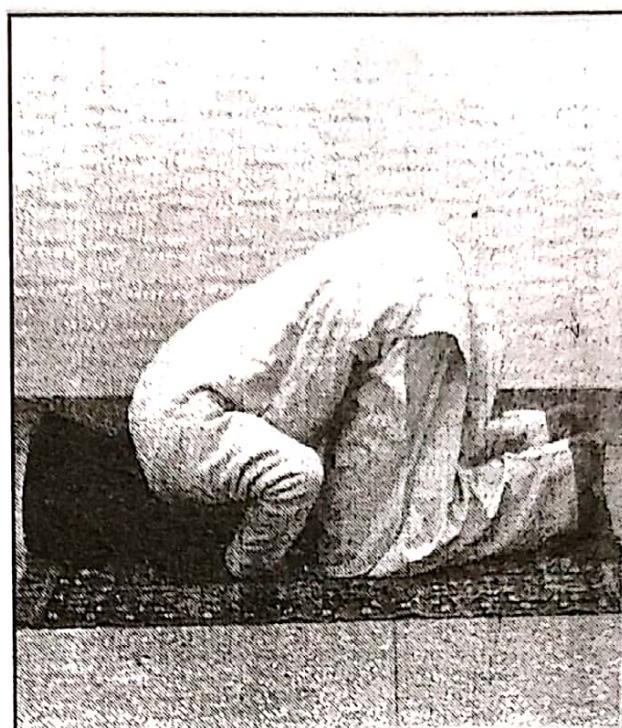
कियाम

## छाया चित्र – घ

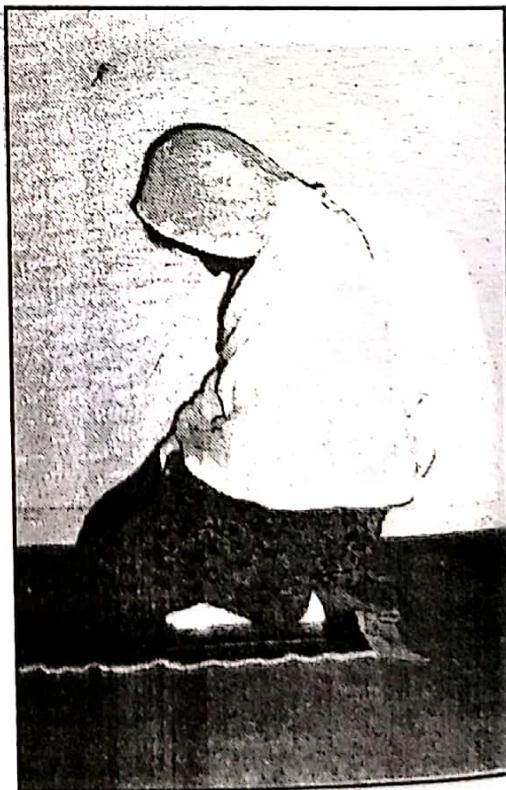
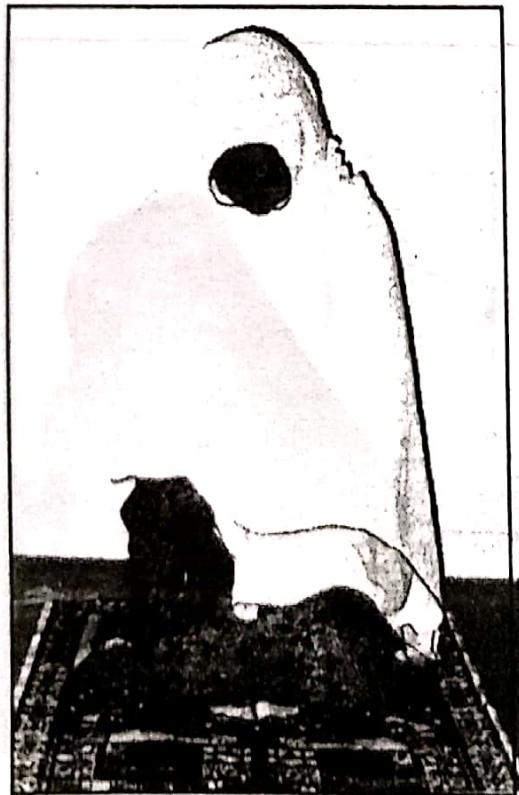
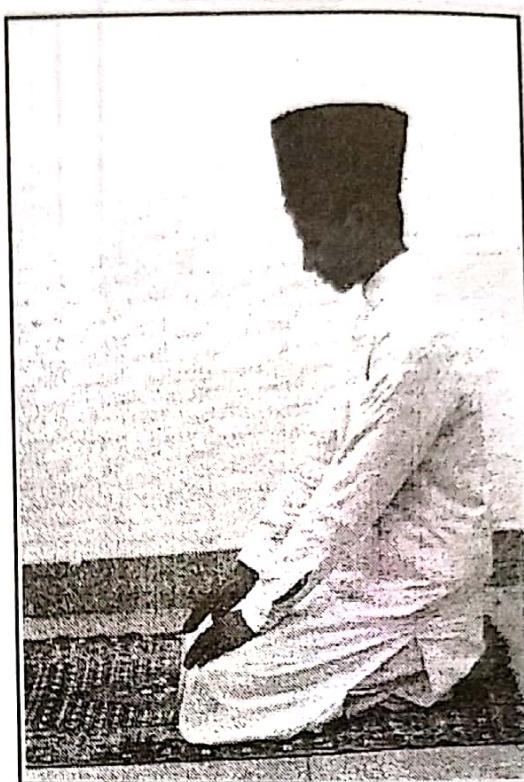
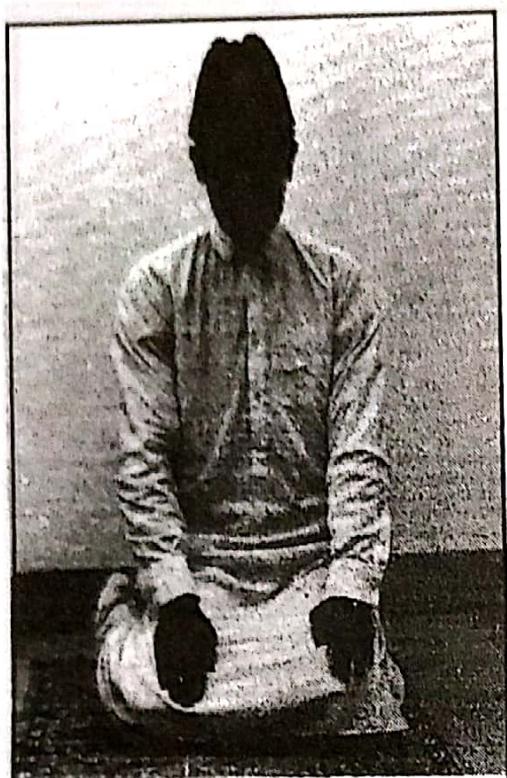


रक्खा

छाया चित्र - डॉ. रमेश कुमार

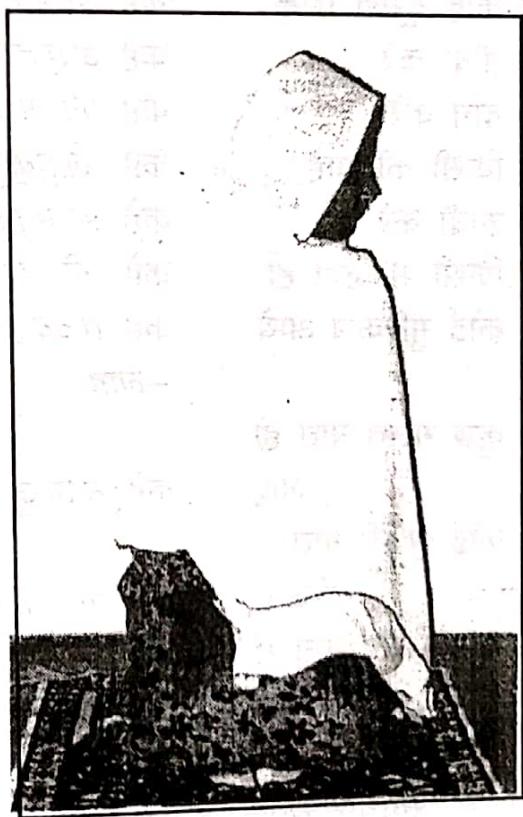
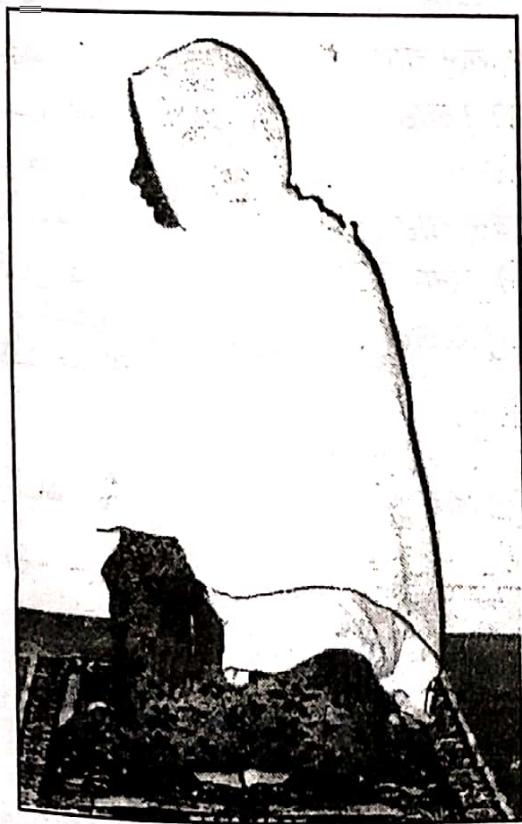
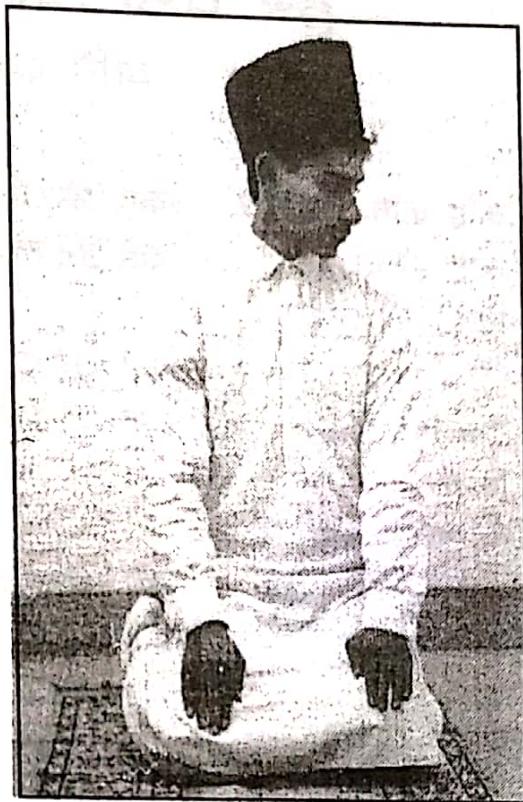
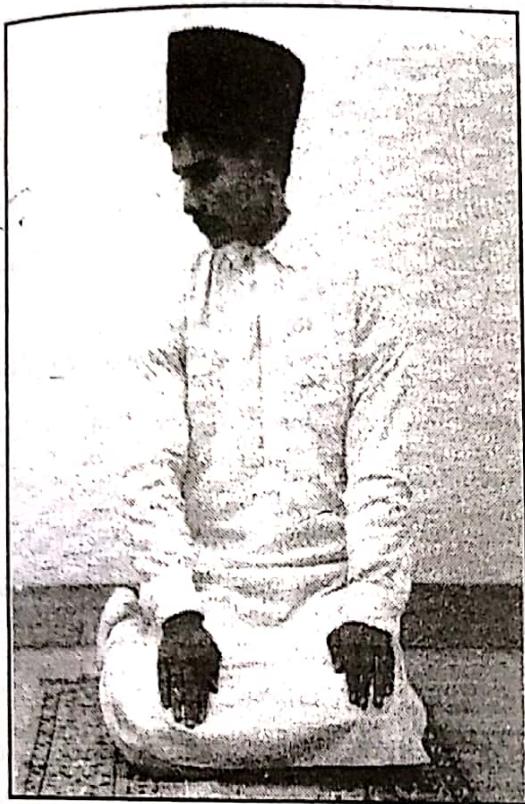


सजदह



जलसा और क'अदा

## छाया चित्र - ४



तस्लीम

# ਹਰ ਘੜੀ ਅੰਲਾਹੁ ਕਨੀ ਥਾਵ ਧਾਨੀ ਕਵ ਕਿਆ ਕਾਹੇ

ਜਬ ਕੋਈ ਕਾਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕਾਰੇ  
ਜਬ ਕੋਈ ਇਸਾਦਾ ਕਾਰੇ  
ਜਬ ਕਿਸੀ ਕੀ ਤਾਰੀਫ  
ਕਾਰੇ

ਜਬ ਤਕਲੀਫ ਮੌਹੂਦ ਹੋ  
ਜਬ ਕਿਸੀ ਕੋ ਸਰਾਹੇ  
ਜਬ ਕਿਸੀ ਕਾ ਧਨਿਆਵਾਦ  
ਕਾਰੇ

ਜਬ ਸੋ ਕਰ ਜਾਗੇ

ਜਬ ਕਸਮ ਖਾਧੇ  
ਜਬ ਛੀਂਕੇ  
ਜਬ ਕੋਈ ਦੂਸਰਾ ਛੀਂਕੇ  
ਜਬ ਤੌਵਾ ਕਾਰੇ  
ਜਬ ਦਾਨ ਕਾਰੇ  
ਜਬ ਕਿਸੀ ਕੋ ਚਾਹੇ  
ਜਬ ਸ਼ਾਦੀ ਕਾਰੇ  
ਜਬ ਕਿਸੀ ਸੇ ਜੁਦਾ ਹੋ  
ਜਬ ਕੋਈ ਮੁਖਿਕਲ ਆਧੇ

ਜਬ ਕੁਛ ਗੁਲਤ ਬਾਤ ਹੋ  
ਜਾਏ  
ਜਬ ਕੋਈ ਅਚ਼ਹੀ ਬਾਤ  
ਹੋ ਜਾਏ  
ਜਬ ਸਾਮੂਹਿਕ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਮੌਹੂਦ  
ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੋ  
ਜਬ ਕਿਸੀ ਕੀ ਮ੃ਤ੍ਯੁ ਕਾ  
ਸਮਚਾਰ ਸੁਨੇ

ਕਾਹੇ ਵਿਸ਼.ਮਿਲ.ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਇਨ.ਸਾ.ਅਲ.ਲਾਹ

ਕਾਹੇ ਸੁਵ.ਹਾ.ਨਲ.ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਯਾ ਅਲ.ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਸਾ ਸਾ.ਅਲ.ਲਾਹ

ਕਾਹੇ ਯ. ਯਾ. ਕਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਲਾ ਝ. ਲਾ. ਹ ਝਲ.—  
ਲਲ. ਲਾਹ

ਕਾਹੇ ਵਲ. ਲਾਹ ; ਵਿਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਅਲ. ਹਮ. ਦੁ ਲਿਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਧਰ. ਹ. ਸੁ. ਕਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਅਲ. ਤਾ. ਫਿ. ਰਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਫੀ ਸ. ਬੀ. ਲਿਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਲਿ. ਹੁ. ਬੁ. ਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਆ. ਮਨ. ਤੁ ਬਿਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਫੀ ਅ. ਮਾ. ਨਿਲ. ਲਾਹ  
ਕਾਹੇ ਤ. ਵਕ. ਕਲ. ਤੁ ਅਲਲ  
—ਲਾਹ

ਕਾਹੇ ਨ. ਊ. ਜੁ ਬਿਲ. ਲਾਹ

ਕਾਹੇ ਫ. ਤ. ਬਾ. ਰ. ਕਲ. ਲਾਹ

ਕਾਹੇ .ਆਮੀਨ

ਕਾਹੇ ਇਨ. ਨਾ ਲਿਲ. ਲਾਹਿ ਵ  
ਇਨ. ਨਾ ਝ. ਲੋ. ਹਿ ਰ. ਜਿ. ਊਨ

بِسْمِ اللّٰہِ  
الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

سُبْحٰنَ اللّٰہِ  
بِسْمِ اللّٰہِ  
مَا شَاءَ اللّٰہُ

بِسْمِ اللّٰہِ

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰہُ  
وَاللّٰہُ بِإِلٰہٍ  
الْحَمْدُ لِلّٰہِ  
يَرْحَمُ الْمُرْحَمِ  
أَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ  
فِي سَبِيلِ اللّٰہِ  
لِحُبِّ اَنَّهُ  
أَمْنَتْ بِإِلٰہٍ  
فِي أَمَانِ اللّٰہِ  
ثُوَکَلتُ عَلَى اللّٰہِ

شَعُورٌ بِاللّٰہِ

فَتَبَارَكَ اللّٰہُ

آمِينٌ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ